महर्षि दयानन्द सरस्वती की
उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा
का मुख पत्र

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षाः,
सत्यव्रता रहितमानमलापहाराः।
संसारदुःखदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकाराः।।

वर्ष : ६१ **अंक** : १८
दयानन्दाब्द: १९५
विक्रम संवत्: आश्विन कृष्ण २०७६
कलि संवत्: ५१२०
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,१२०

सम्पादक
डॉ. सुरेन्द्र कुमार

प्रकाशक- परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-मन्त्री, परोपकारिणी सभा
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

परोपकारी का शुल्क

भारत में

एक वर्ष-३०० रु.
पाँच वर्ष-१२०० रु.
आजीवन -३००० रु.
एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डॉलर
द्विवार्षिक-९५ पाउण्ड/१५२ डॉलर
त्रिवार्षिक-१४० पाउण्ड/२२५ डॉलर
आजीवन (१५वर्ष)-५००पा./८०० डॉ.
एक प्रति - ३ पाउण्ड
एक प्रति - ४ डॉलर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

RNI. No. ३९५९ / ५९

i jki dkjh

सितम्बर द्वितीय २०१९

अनुक्रम

०१. योगदर्शनकार पतञ्जलि के...	सम्पादकीय	०४
०२. मृत्यु सूक्त-३७	डॉ. धर्मवीर	०७
०३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	१०
०४. वेद और विकासवाद	पं. यशःपाल सिद्धा.	१५
०५. योगेश्वर श्रीकृष्ण जी का दूरदर्शी...	कन्हैयालाल आर्य	२१
०६. शङ्का समाधान- ५५	डॉ. वेदपाल	२४
०७. संस्था - समाचार	ब्र. नीलेश आर्य	२६
०७. संस्था की ओर से...		२७
०९. १३६ वाँ ऋषि बलिदान समारोह		३०
१०. वेदगोष्ठी-२०१९		३१
११. 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति		३३
१२. आर्यजगत् के समाचार		३४

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ
www.paropkarinisabha.com→gallery→videos

'परोपकारी' पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इन्हें सम्पादकीय नीति नहीं समझा जाये। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

सम्पादकीय

योगदर्शनकार पतञ्जलि के जीवन-विषयक इतिहास-प्रदूषण

आधुनिक युग के पुस्तक-लेखकों में यह उपयोगी परम्परा प्रचलित है कि वे अपनी पुस्तक में अपना परिचय अंकित कर देते हैं। उससे उनके जीवन विषयक इतिहास में न तो वर्तमान में कोई सन्देह उत्पन्न होता है और न भविष्य में होगा। प्राचीन काल के बहुत से ऋषि, मुनि, मनीषी इतने निष्काम और लोकैषणा रहित थे कि वे नाम के अतिरिक्त अपना परिचय अंकित नहीं करते थे। विद्या-परम्परा के विलुप्त हो जाने पर और सम्बन्धित साहित्य के विनष्ट होने के कारण अब उनके जीवन-विषयक यथावत और पर्याप्त सामग्री नहीं मिल रही है। उससे अनेक हानियाँ हो रही हैं। जिज्ञासु पाठकों को अभीष्ट परिचय उपलब्ध नहीं हो रहा है। तथ्य न मिल पाने के कारण अनुश्रुतियों के आधार पर अथवा विभिन्न कालों में उत्पन्न एक नाम के अनेक व्यक्तियों को एक ही व्यक्ति मानकर लेखक भ्रमित हो रहे हैं और पाठकों को भ्रमित कर रहे हैं। भारतीय परम्परा-विरोधी लेखक इस सन्देहात्मक स्थिति का लाभ उठाकर उन प्राचीन मनीषियों के अस्तित्व को या तो नकार रहे हैं अथवा उनके विवरण को विकृत रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं। विरोधी लेखकों ने हमारी प्रत्येक गौरवशाली परम्परा को सन्देहात्मक, विकृत और प्रदूषित करने का प्रयास किया है। उन लेखकों को सन्देहात्मक अवसर उपलब्ध कराने के लिए हमारी परम्परा के कुछ पूर्वज और वर्तमान लेखकों/पाठकों का अज्ञान, आवश्यक शोध का अभाव, अन्धविश्वास और दुराग्रह उत्तरदायी है। इससे भी अधिक दु:ख की बात यह है कि ऐतिहासिक तथ्य स्पष्ट होने के बाद भी कुछ लोग एक बार अपना लिये गये स्वाग्रह को छोड़ना नहीं चाहते, चाहे उससे इतिहास की कितनी ही हानि हो रही हो। प्राय: सभी प्राचीन ऋषि, महापुरुष, श्रद्धेय व्यक्तित्व महर्षि मनु, महर्षि वाल्मीकि, श्रीकृष्ण, श्रीराम, वीर हनुमान्, ब्रह्मा, विष्णु, शिव, गणेश आदि ऐतिहासिक विकृति के शिकार हैं। अब तो छोटे से कालखण्ड में ही महर्षि दयानन्द को भी इतिहास प्रदूषण के ग्रहण के घेरे में ले लिया है। प्रस्तुत लेख में विश्व को योग-विद्या का अद्‌भुत ग्रन्थ रत्न प्रदान करने वाले मुनि पतञ्जलि के जीवन-विषयक इतिहास प्रदूषण के सन्दर्भ में चर्चा की जायेगी। ऐसा देखने में आता है कि अधिकांश जन निम्नलिखित प्रसिद्ध अनुश्रुति का उल्लेख मुनि पतञ्जलि के परिचय में रुचिपूर्वक करते हैं-

योगेन चित्तस्य पदेन वाचाम्, मलं शरीरस्य च वैद्यकेन,
योऽपाकरोत् तं प्रवरं मुनीनाम्, पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोऽस्मि।

इसका अर्थ किया जाता है- ''**योगेन**= योगशास्त्र की रचना के द्वारा चित्त के दोषों को, **पदेन**= पदशास्त्र अर्थात् महाभाष्य की रचना के द्वारा वाणी= भाषा सम्बन्धी अशुद्धियों को, **वैद्यकेन**= वैद्यक शास्त्र की रचना द्वारा शरीर सम्बन्धी मलों= रोगों को जिसने दूर किया है, मुनियों में श्रेष्ठ उस पतञ्जलि को मैं हाथ जोड़कर प्रणाम करता हूँ।''

इस श्लोक के विषयक कुछ चर्चाएं की जानी आवश्यक हैं। कुछ लोगों का कहना है कि उपर्युक्त श्लोक चरक संहिता की एक टीका और भर्तृहरि-रचित '**वाक्यपदीय**' के आरम्भ में मंगलाचरण के रूप में अंकित मिलता है। कुछ प्रतियों में अंकित यह श्लोक अनुश्रुति के आधार पर किसी हस्तलिखित प्रतिलिपिकर्त्ता का लिखा हुआ है। प्रतिलिपिकर्त्ताओं की यह प्रवृत्ति देखने को मिलती है कि वे प्रतिलिपि करते समय अभीष्ट मंगलाचरण, जैसे- ''**श्री गणेशाय नम:, श्री विष्णवे नम:, परमात्मने नम:**'' आदि अपनी ओर से लिख देते हैं, जबकि वह लेखक का वाक्य नहीं होता। उपर्युक्त श्लोक भर्तृहरि जैसे महाविद्वान् का नहीं हो सकता, क्योंकि वे इतनी बड़ी ऐतिहासिक और कालखण्ड विरुद्ध भूल नहीं कर सकते कि कई सहस्राब्दी पूर्व के लेखक को और दो सहस्राब्दी पूर्व के लेखक पतञ्जलि को एक घोषित कर दें। वह प्राचीन इतिहास-परम्परा के ज्ञाता थे। दूसरा तथ्य यह भी है कि इसकी व्याख्या अशुद्ध की जाती हो। वर्णित 'योगशास्त्र' योगदर्शनकार का अभीष्ट न होकर किसी परवर्ती पतञ्जलिकृत हो। अशुद्ध व्याख्या भी भ्रामक सिद्ध हो रही है।

जब यह भ्रान्ति विद्वानों और प्रभावशाली लोगों में स्वीकार्य हो जाती है तो वह और अधिक दृढ़मूल तथा व्यापक बन जाती है। उससे यह गम्भीर हानि होती है कि तथ्यों की तुला पर सही सिद्ध न होने के कारण ऐसा कथन सम्बन्धित इतिहास

को सन्देहात्मक बना देता है जिससे कोई भी इतिहास अप्रामाणिक कोटि के अन्तर्गत आ जाता है। आज इस विषय पर विवेचन करना इसलिए महत्त्वपूर्ण एवं आवश्यक हो जाता है क्योंकि आज विश्व में योग-विद्या का पुनरुद्धार होने से करोड़ों जन योग विद्या के अनुपालक हैं, जिनमें मुनि पतञ्जलि की चर्चा होती है। योगविद्या के उन श्रद्धालुओं में यदि योगदर्शन-प्रणेता मुनि पतञ्जलि के जीवन-विषय में कोई भ्रान्ति अथवा अज्ञानता है, तो उसका निवारण होना चाहिए। यह उनका नैतिक कर्त्तव्य बनता है। पतञ्जलि के नाम से चलने वाली संस्थाओं का भी यह कर्त्तव्य है।

अब तक प्राप्त शोधात्मक जानकारियों के अनुसार, ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में पतञ्जलि नाम के एक दर्जन से अधिक शास्त्रकारों/आचार्यों की जानकारी प्राप्त हो चुकी है। संस्कृत के ग्रन्थों में प्राप्त उद्धरणों से हमें यह जानकारी भी मिलती है कि योगदर्शनकार पतञ्जलि से भिन्न परवर्ती एक अन्य पतञ्जलि भी हुए हैं जिन्होंने एक स्वतन्त्र 'योगशास्त्र' की रचना भी की थी। सीमित स्थान होने के कारण इस लेख में सभी पतञ्जलियों की समीक्षात्मक विवेचना नहीं की जावेगी, पूर्वोक्त श्लोक में वर्णित केवल तीन पर विमर्श किया जायेगा। उन तीन में व्याकरण-महाभाष्यकार पतञ्जलि का जीवनकाल लगभग स्पष्ट है, अतः उन्हीं के विवरण से आरम्भ करके इस विषय पर विमर्श किया जाता है।

महाभाष्यकार पतञ्जलि- संस्कृत-व्याकरण के क्षेत्र में प्रसिद्ध विशाल ग्रन्थ 'महाभाष्य' के प्रणेता महावैय्याकरण पतञ्जलि के जीवन-काल के विषय में कोई सन्देह नहीं है कि वे मगध सम्राट् पुष्यमित्र शुङ्ग के समकालीन थे। वे पुष्यमित्र के पुरोहित थे। इस विषयक पुष्ट प्रमाण 'महाभाष्य' में स्वयं मुनि पतञ्जलि ने प्रस्तुत किये हैं। वे वर्तमान की क्रियाओं का प्रयोग करते हुए लिखते हैं-

१. राजा पुष्यमित्र का यज्ञ चल रहा है और हम उस यज्ञ को करा रहे हैं (**इह पुष्यमित्रं याजयामः**, ३.२.१२३)।

२. महाभाष्य में '**पुष्यमित्र-सभा**' का भी उल्लेख है (१.१.६८)।

३. पश्चिम से आये आक्रमणकारी मिनेन्डर नामक यवन (यूनानी) द्वारा साकेत नगर को घेरने का वर्णन है (अरुणद् यवनः साकेतम्, ३.२.१११)

आधुनिक इतिहासकारों के मतानुसार पुष्यमित्र का स्थिति काल द्वितीय शताब्दी ईसवी पूर्व है, अर्थात् महाभाष्यकार पतञ्जलि को २१०० वर्ष हुए हैं। भारतीय परम्परा के इतिहासकार पं. भगवद्दत्त, पं. युधिष्ठिर मीमांसक, षड्दर्शन भाष्यकार आचार्य उदयवीर शास्त्री के अनुसार वैय्याकरण पतञ्जलि को ३२०० वर्ष हो चुके हैं। ये विद्वान् मानते हैं कि यूरोपीय इतिहासकारों और उनके अनुयायियों ने भारतीय इतिहास को सोद्देश्य कम करके आंका है। ऐसा करके भारतीय इतिहास की प्राचीनता को कम करने का प्रयास किया है।

पुष्यमित्र शुङ्ग को इतिहास में राजद्रोही सेनापति के रूप में स्मरण किया जाता है। यह मौर्यवंशी मगध सम्राट् बृहद्रथ का सेनापति था। एक दिन इसने सम्राट् की सेना-दर्शन के अवसर पर हत्या कर दी और स्वयं को मगध का सम्राट् घोषित कर दिया। बृहद्रथ की हत्या के साथ मौर्य-साम्राज्य का अन्त हो गया और शुङ्ग ब्राह्मण वंश की स्थापना हो गई। कुछ लेखकों ने घटनाओं की कल्पना करके पुष्यमित्र द्वारा किये गये राजद्रोह को महिमामंडित करने का भी प्रयास किया है। यह घटना इतिहास की चर्चित प्रमुख घटना है। जो इतिहास में स्पष्ट है।

आयुर्वेदज्ञ पतञ्जलि- आयुर्वेद की परम्परा में आयुर्वेदज्ञ पतञ्जलि की चर्चा अत्यल्प है। **आषाढ़वर्मा**-कृत '**परिहार वार्तिक**' ग्रन्थ से जानकारी मिलती है कि पतञ्जलि नामक आचार्य ने चरक-संहिता पर '**पातञ्जल-वार्तिक**' नाम का ग्रन्थ लिखा था। पतञ्जलि-रचित एक ग्रन्थ की पाण्डुलिपि लन्दन स्थित 'इण्डिया लाइब्रेरी' में सुरक्षित है। उसका नाम है- '**वातस्कन्ध-पैत्तस्कन्धोपेत-सिद्धान्तसारावलि**'।

कुषाण राजा कनिष्क के इतिहास में उल्लेख आता है कि उसकी पुत्री रोगग्रस्त थी। आयुर्वेदाचार्य पतञ्जलि ने अपनी चिकित्सा से उसको रोगमुक्त किया था। कनिष्क का राज्यकाल द्वितीय शती ईसवी पूर्व माना जाता है। कुछ विद्वानों का मानना है कि समसामयिक होने से सम्भव है कि वैय्याकरण पतञ्जलि और आयुर्वेदज्ञ पतञ्जलि एक ही व्यक्ति था। इन ग्रन्थों के आधार पर इस पतञ्जलि को चरक-संहिता का प्रतिसंस्कर्ता कहा जाता है। ऐसा माना जाता है कि इसी पतञ्जलि ने कोई अध्यात्म विषयक शास्त्र भी लिखा था, जो अप्राप्त है, किन्तु उसके उद्धरण सांख्य-योग विषयक

युक्तिदीपिका आदि ग्रन्थों में मिलते हैं।

योगदर्शनकार पतञ्जलि- योगदर्शन जैसे सर्वजनज्ञात ग्रन्थ के प्रणेता महर्षि पतञ्जलि का अपना जीवनवृत्त एवं काल अज्ञात है। उन्होंने अपना परिचय न देकर यह सिद्ध कर दिया है कि उनका जीवन लोकैषणा से रहित था। यदि परिचय होता तो अच्छा होता, यूरोपियन और उनके अन्ध-अनुयायी लेखकों को उनके जीवन-परक इतिहास का प्रदूषण करने का अवसर नहीं मिलता। विडम्बना देखिए, उच्च स्तर के मान्य भारतीय लेखक भी यूरोपीय लेखकों के अन्धानुकरण में पड़कर अपनी भारतीय परम्पराओं की अवहेलना करके अपने ही इतिहास की विकृति कर बैठे। कम से कम ५१०० वर्ष पूर्व के महाभारत-कालीन एक महर्षि को कई सहस्राब्दी पीछे खींचकर ईसा पूर्व की दो-तीन शती का नवीन व्यक्ति लिखते हुए उनके इतिहास-ज्ञान को कुछ भी संकोच नहीं हुआ। डॉ. राधाकृष्णन् ने ३०० ईसा पूर्व लिखा तो प्राच्यशोधक के रूप में विख्यात डॉ. आर.जी. भाण्डारकर ने एक कदम और पीछे हटकर १५० ईसवी पूर्व का बताया। कुछ लेखकों का पूर्वाग्रह जब पुष्ट नहीं हुआ तो यहाँ तक लिख दिया कि योगदर्शन का भाष्यकार महाभारत-कालीन नहीं है, कोई अन्य नवीन-व्यास है। अपना अवमूल्यन करना कोई इन लेखकों से सीखे!!

निष्कर्ष- १. भारतीय षड्दर्शन साहित्य और इतिहास परम्परा में प्राचीन काल से निरन्तर यह मान्यता रही है कि योगदर्शन पर उपलब्ध 'व्यास भाष्य', महाभारत-कालीन महर्षि कृष्ण द्वैपायन व्यास द्वारा रचित है। प्राचीन काल में वेदों, वेदांगों, दर्शनों आदि के अध्ययन-अध्यापन, लेखन, भाष्यकरण की विद्या-परम्परा का संबन्ध प्रमुखत: महर्षि व्यास और उनकी शिष्य-परम्परा से रहा है। उनको अमान्य कर ईसवी पूर्व के आसपास किसी नये व्यास की कल्पना करना नव्य लेखकों द्वारा अपने आग्रह को येन-केन प्रकारेण सिद्ध करना मात्र है। इस प्रकार वे एक प्राचीन ऋषिकृत महत्त्वपूर्ण शास्त्र की प्राचीनता को नष्ट कर उसको नवीन सिद्ध करने की यूरोपीय योजना का पात्र बन रहे हैं। यह परम्परा यह भी पुष्ट प्रमाण प्रस्तुत कर रही है कि पतञ्जलिकृत योगदर्शन द्वितीय शताब्दी ईसवी पूर्व के वैय्याकरण पतञ्जलि की रचना नहीं है। उन्होंने ऐसा कोई योगसूत्र ग्रन्थ नहीं रचा। महाभारत-कालीन महर्षि व्यास का भाष्य होने के कारण योगदर्शनकार पतञ्जलि का स्थितिकाल भी महाभारत अथवा उससे पूर्व का स्थिर होता है।

२. षड्दर्शनों में तीन दर्शनों का सम्बन्ध महर्षि व्यास से है। वे **वेदान्तदर्शन** (**ब्रह्मसूत्र**) के रचयिता हैं। अपने शिष्य जैमिनि द्वारा रचित '**मीमांसादर्शन**' के भाष्यकार हैं। यह विद्या-परम्परा उनको योगदर्शन के भाष्य से जोड़ती है। यदि कुछ नव्य इतिहासकार ईसवी पूर्व के व्यास की कल्पना कर रहे हैं, तो इस ऐतिहासिक तथ्य का उत्तर क्यों नहीं दे पा रहे कि महाभारत-कालीन 'मीमांसा दर्शन' का प्रणेता ऋषि जैमिनि, जो महर्षि व्यास का प्रत्यक्ष शिष्य था, उसका स्थितिकाल पीछे खींचकर कई सहस्राब्दी के बाद ईसवी सन् में कैसे लायेंगे? उसका काल तो महाभारत-काल में ही सिद्ध हो रहा है।

३. महाभारत में तीन-चार आदि योग-प्रवक्ताओं का अनेकश: उल्लेख आता है, जैसे- हिरण्यगर्भ, विवस्वान्, सनत्कुमार, सांख्याचार्य। सांख्याचार्य (कपिल) के योगशास्त्र से भिन्न एक अन्य योगशास्त्र का भी अनेक बार सांख्य के साथ युग्म के रूप में वर्णन है। षड्दर्शनों की गणना में सांख्यदर्शन के साथ और बाद में पतञ्जलिरचित योगदर्शन का ही नामोल्लेख प्राचीन परम्परा से हो रहा है। महाभारत में योग-विषयक उपदेशों, संवादों में प्रसंगानुसार योग के अंगों की चर्चा मिलती है। इनसे संकेत मिलता है कि ये विवरण योगदर्शन से लिये गये हैं। अत: पतंजलि का समय महाभारतकालीन अथवा उससे पूर्व का है। इसके अन्य पोषक प्रमाण भी हैं। विस्तारभय से उनको उद्धृत नहीं किया जा रहा है।

४. भारतीय परम्परा के इतिहासज्ञ पं. भगवद्दत्त, पं. युधिष्ठिर मीमांसक, षड्दर्शनों के भाष्यकार आचार्य उदयवीर शास्त्री का मत भी यही है कि पतञ्जलि महाभारतकालीन हैं। शास्त्री जी का मत है कि पूर्वोक्त अनुश्रुति और तीनों पतञ्जलियों को एक वर्णित करनेवाले भर्तृहरि, समुद्रगुप्त, भोज आदि के जो कथन मिलते हैं, या तो उनकी व्याख्या अशुद्ध की जा रही है, अथवा वे एक-दूसरे के भावुक अनुचरण मात्र हैं। ये वैय्याकरण और आयुर्वेदाचार्य पतञ्जलि को एक व्यक्ति मानते हैं। योगदर्शनकार इनसे भिन्न और प्राचीन हैं।

डॉ. सुरेन्द्र कुमार

मृत्यु सूक्त-३६

प्रवचनकर्त्ता- डॉ. धर्मवीर

लेखिका - सुयशा आर्य

परोपकारिणी सभा के पूर्वप्रधान डॉ. धर्मवीर जी के वेद-विज्ञान के अन्तर्गत प्रसारित व्याख्यानों की जनोपयोगिता को ध्यान में रखकर 'परोपकारी' में प्रकाशित किया जा रहा है। व्याख्यानों के लेखन का कार्य उनकी ज्येष्ठ पुत्री सुयशा आर्य कर रही हैं। -सम्पादक

आरोहतायुर्जरसं वृणाना अनुपूर्वं यतमाना यतिष्ठ।
इह त्वष्टा सुजनिमा सजोषा दीर्घमायुः करति जीवसे वः।।

हम दीर्घ आयु के लिए परमेश्वर का सहयोग कैसे प्राप्त कर सकते हैं और उसकी सहायता से वह हमारी आयु को कैसे बढ़ा सकता है, इन बातों पर विचार कर रहे थे।

हमने देखा था, हम जितने सावधान और सतर्क रहते हैं उतना ही वह हमको लाभ देता है। हमने पिछली चर्चा में सन्दर्भ से एक बात आपके सामने रखी थी कि कब हम झूठ बोलने के लिए बाध्य होते हैं और कब हम सच बोलते हैं। हमें संसार में हर समय यह लगता है कि अगर सच बोला तो हमें हानि हो जायेगी इसलिये हम भयभीत रहते हैं और हर समय झूठ बोल कर 'लाभ प्राप्त किया' ऐसा हमारे मन में आता है। मनुष्य सच कब बोल सकता है? जब वह इस संसार की न्याय-व्यवस्था से बड़ी व्यवस्था को देखता, जानता, समझता, मानता है। जो व्यक्ति परमेश्वर की न्याय-व्यवस्था को जानता और मानता नहीं है, वह जीवन में कभी सच नहीं बोल सकता, क्योंकि जैसे यहाँ की न्याय-व्यवस्था में झूठ बोलनेवाले को हम सफल होते हुए देखते हैं, उस सफलता को देखकर हम सच बोलने का साहस नहीं कर सकते। लेकिन एक दूसरी व्यवस्था है, जो परमेश्वर की व्यवस्था है। उस परमेश्वर की व्यवस्था को जब हम देखते हैं, तो क्या वहाँ भी झूठ, बेईमानी, चोरी चलती है क्या? चल सकती है क्या? यदि चलती होती तो लोग आज इतने दुःखी नहीं होते, क्योंकि ये तो दंडित लोग हैं। जो बीमार हैं, जो दुःखी हैं, जो अपंग हैं, जो अभाव ग्रस्त हैं, वे सब उससे दण्ड पाए हुए हैं।

एक विचित्र परिस्थिति है, मनोविज्ञान है कि मनुष्य धर्म का आचरण तभी कर सकता है जब उसे परमेश्वर की न्याय-व्यवस्था में विश्वास होता है। धर्म का आचरण कुछ नहीं है, धर्म का आचरण उन नियमों को स्वीकार करना है, जो परमेश्वर के हैं, उन नियमों को स्वीकार करना है जो प्रकृति में है और जब उन नियमों को आप स्वीकार करते हैं, तब आप परमेश्वर की न्याय-व्यवस्था में रहते हैं, तो उसका फल भी आपको अवश्य मिलेगा। लेकिन जब हम संसार की न्याय-व्यवस्था को आदर्श मानते हैं तो हमको सदा भयभीत होना पड़ता है, झूठ बोलना पड़ता है, बेईमानी करनी पड़ती है और फिर भी हमारा काम कभी बनता है, कभी नहीं भी बनता है। इसलिए जो मनुष्य धार्मिक होगा, वह ईश्वर में अवश्य विश्वास करेगा।

ईश्वर में विश्वास करने का मतलब होता है, ईश्वर के नियमों को मानना, प्रकृति के नियमों को स्वीकार करना, उस पर भरोसा करना और यदि हम एक बार परमेश्वर के नियमों पर भरोसा करते हैं तो उन नियमों पर चलते हैं और उन नियमों पर चलने का नाम ही धर्म है।

एक उदाहरण- ऋषि दयानन्द के जो भी विचार हैं, कभी-कभी हमको बहुत नये लगते हैं, उनके अपने लगते हैं। लेकिन आप यदि इस पर गहराई से विचार करें और शास्त्रों का स्वाध्याय करें तो आप एक बात पायेंगे कि ऋषि के विचार आपको कहीं न कहीं शास्त्र में मिल जायेंगे। इसका एक अच्छा सा उदाहरण मैं आपको देना चाहूँगा। ऋषि दयानन्द कहते हैं कि सत्य और धर्म में कोई अन्तर नहीं है। सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को

विचार करके करने चाहिए। सत्य-असत्य का विचार करना अर्थात् धर्मानुसार आचरण करना चाहिए। तो धर्म और सत्य में अन्तर कितना हुआ? केवल इतना अन्तर हुआ जो शब्द में और आचरण में है। इसलिए उपनिषद् में कहा, '**सत्यं वद, धर्मं चर।**' मतलब **जो विचार है उसको ठीक रखना, यह सत्य है, व्यवहार को ठीक रखना, यह धर्म है।** उस सत्य विचार के अनुसार व्यवहार को करना, यह धर्म है। यहाँ पर हम ऋषि के इस वाक्य को जब देखते हैं कि सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए, तो उनकी दृष्टि से सत्य और धर्म कुछ भिन्न नहीं है। लेकिन ऋषि दयानन्द का यह विचार मूलरूप से शास्त्रीय विचार है, ऋषियों का विचार है। छान्दोग्य उपनिषद् में यह प्रकरण आता है- **सत्यं वदन्तम् आहुः धर्मं चरति इति, धर्मं चरन्तम् आहुः सत्यं वदति इति।** अर्थात् जो आदमी दुनिया में सच्चा है, ईमानदार है, सहज है, सरल है, उसे लोग धार्मिक कहते हैं। जो व्यक्ति धार्मिकता के चिह्नों से युक्त है- तिलक लगाए हुए है, रामनामी ओढ़े हुए है, खड़ाऊँ पहने हुए है तो हम सोचते हैं बड़ा धर्मात्मा आदमी है। जो धर्मात्मा है उससे हम यह आशा भी करते हैं कि यह जो कुछ कहेगा, ठीक कहेगा, जो कुछ करेगा वो ठीक-ठीक करेगा। यदि वह गलत करता है तो उन चिह्नों में और उसके व्यक्तित्व में मेल नहीं आता, गडबड़ हो जाती है। इसलिए शास्त्रकार कहता है, **सत्यं वदन्तम् आहुः धर्मं चरति इति** और कहता है **धर्मं चरन्तम् आहुः सत्यं वदति इति।** जो आदमी सच बोलता है, लोग उसे धार्मिक कहते हैं और लोग जिसे धार्मिक मानते हैं, उन धार्मिक दिखने वाले लोगों से अपेक्षा की जाती है कि यह उचित करेंगे, धर्मानुसार करेंगे। इसलिये यह भी कह रहा है- **सुजनिमा सजोषा दीर्घमायुः करति जीवसे वः** कहता है कि जीवन के लिए जो लम्बी आयु देने वाला है, अच्छा, उत्तम जन्म देने वाला है, जो उत्तम लाभ, प्रेम और हमें सुख देने वाला है, ये सब लाभ हम तभी प्राप्त कर सकते हैं, जब हमारा उस पर विश्वास हो, हमारा उस पर भरोसा हो कि हम इस नियम पर चलेंगे तो इसका हमको अनुकूल फल मिलेगा। इसलिए जो व्यक्ति सोचता हो कि मैं सच बोलूँ, तो वह सच बोल सकता है जब उसे ईश्वरीय न्याय-व्यवस्था में विश्वास हो। यदि उसे एक बाल भर भी अविश्वास है तो वह सच नहीं बोल सकता, क्यों? क्योंकि वह ईश्वर को जानता नहीं है, ईश्वर की कर्म-फल व्यवस्था को समझता नहीं है। जो ईश्वर की न्याय-व्यवस्था को जानता, समझता, करता है वह कभी गलत कर ही नहीं सकता। यह बिल्कुल इस तरह से है, जैसे कोई व्यक्ति प्रकाश में, सबके बीच में, माता-पिता के सामने, पुलिस के सामने अपराध नहीं करता, वह इनके न्याय से, शासन से, इनकी दृष्टि से परिचित है कि ऐसा किया तो दण्डनीय होगा। वह इनके सामने अच्छा करता है, स्वयं को अच्छा बताना चाहता है, अच्छा दिखाता है। वह जानता है कि इनको अच्छा दिखाने से, करने से ये मुझे पुरस्कृत करेंगे, मुझसे प्रसन्न होंगे, मुझे अपनायेंगे।

यह धार्मिक होने का जो हमारा आधार है वह ईश्वर की न्याय-व्यवस्था व प्रकृति के नियमों में विश्वास का है। जो व्यक्ति धार्मिक है, उसके लिए कहते हैं- **दाता समः सत्यपरः दयावान्।** यह जो **सत्यपरः** शब्द कहा है कि उसी व्यक्ति का मन निर्भय हो सकता है, उसी का मन निर्मल हो सकता है, उसी का मन प्रसन्न हो सकता है। जैसा कि हमने पीछे देखा था, **प्रसादे सर्व दुःखानां हानिरस्योपजायते।** चेहरे पर प्रसन्नता तब आ सकती है, जब मन में पवित्रता हो। हमारी आकृति में जो प्रसाद है, प्रसन्नता है, अनुकूलता है वह मन की पवित्रता के बिना पैदा नहीं हो सकती। इसलिए यहाँ पर एक विशेषण जो दिया है- **सत्यपरः** अर्थात् मानसिक दृष्टि से स्वस्थ रहने के लिए सत्य पर विश्वास करना, सत्य का व्यवहार करना, सत्य का आचरण करना, यह अनिवार्य है। यदि आप सत्य के आचरण से विमुख हैं तो आप भयभीत होंगे, आप बेईमान होंगे, आप कंजूस होंगे और आप कभी भी न अपना कल्याण कर सकते हैं, न दूसरे का। इसलिए कहा कि मानसिक दृष्टि से स्वस्थ होने के लिए मनुष्य को सत्य में निष्ठा रखने वाला, सत्य के प्रति आस्था रखने वाला होना ही चाहिए।

एक शब्द और है इसमें। व्यक्ति यदि संसार में धार्मिक है तो धार्मिक व्यक्ति के मन में नियम पालन तो आता ही आता है, वह पीड़ित व्यक्ति के प्रति दया का भाव भी

स्वाभाविक रूप से रखता है। एक धार्मिक व्यक्ति को आप मानते हैं कि बड़ा दयालु है तो धार्मिक व्यक्ति होना और दयालु होना परस्पर, एक-दूसरे पर निर्भर करता है। धार्मिक व्यक्ति सदा दूसरे की सहायता, उसके कष्टों के कारण करता है। योगदर्शन में कहा है **'मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुखदुःखपुण्यापुण्य-विषयाणां भावनातश्चित्तप्रसादनम्।'** जो हमारे चित्त की, प्रसन्नता की बात हमने पीछे की, वह चित्त की प्रसन्नता हमारी कैसे बने, उसका उपाय बताया गया है। जो व्यक्ति करुणा से भरा हुआ होता है, दयावान् होता है, अहिंसक होता है, वही धार्मिक हो सकता है। जो व्यक्ति हिंसक हो, क्रूर हो, वह धार्मिक हो-ऐसा कभी भी संभव नहीं है। जो मत-सम्प्रदाय क्रूरता करते हुए अपने को धार्मिक मानते हैं, वे गलत मानते हैं। उनका धार्मिक होना संभव ही नहीं है। जो व्यक्ति दयावान् न हो, अहिंसक न हो, संयमी न हो, अपनी इन्द्रियों पर जिसका नियन्त्रण न हो, वह धार्मिक कैसे हो सकता है? धार्मिक वह है जो कानून नहीं तोड़ता। **जैसे देश के नियम को नहीं तोड़ने वाला नागरिक श्रेष्ठ होता है, वैसे ही संसार के बनाने वाले राजा, ईश्वर के नियमों को नहीं तोड़ने वाले नागरिक को हम धार्मिक कहते हैं। ईश्वर की न्याय व्यवस्था, नियम मानने वाले व्यक्ति को हम धार्मिक कहते हैं। जैसे देश के नियम को मानने से व्यक्ति एक श्रेष्ठ, सभ्य नागरिक है, वैसे ही परमेश्वर के नियमों को मानने से, धार्मिक बनने से वह संसार का श्रेष्ठ प्राणी बनता है।**

इसलिए यहाँ कहा- **दाता समः सत्यपरः दयावान्।** जिस व्यक्ति के अन्दर दानशीलता है, जिसमें समता है, सहनशक्ति है, सहन करने का सामर्थ्य है, जो सदा सत्य के प्रति अनुरागी है, आग्रही है, सत्य-व्यवहार के लिए तत्पर है, दयावान् है, उसके लिए वेदमन्त्र में शब्द आता है- **सजोषा**। मन्त्र कहता है कि जितना तुम उसकी ओर चलोगे, उतना वह तुम्हारी ओर चलेगा। मन्त्र ने कहा, भगवान् तुम्हारी आयु तो बढ़ा सकता है, वह तुम्हारी आयु को बढ़ाने के लिए तत्पर भी है, लेकिन वह तुम्हारी आयु बढ़ाता नहीं जायेगा, चाहे तुम कुछ भी करो, ऐसा नहीं होगा। तुम यदि उसके अनुकूल काम करोगे, उसके नियमानुसार काम करोगे तो उसका फल वह तुमको अच्छा अवश्य देगा। वह अच्छा फल जो देगा, उसके लिए यहाँ पर एक प्रयोग किया है, **इह त्वष्टा सुजनिमा सजोषा दीर्घमायुः करति जीवसे वः।** वह सब लोगों के लिए है, किसी एक के लिए नहीं है, बहुवचन का प्रयोग है। कहता है, संसार में जो भी चाहे, वह दीर्घायु को पा सकता है, यह मनुष्य मात्र के लिए है।

पशु-पक्षी तो अपनी स्वतन्त्रता से कुछ कर नहीं सकते, इसके लिए उनके नियम पाप-पुण्य, बाधक-साधक नहीं बनते। वे तो केवल भोग का अधिकार रखते हैं, जो उनकी परिस्थिति है उसके अनुसार करते हैं। लेकिन जो मनुष्य है, उसको अधिकार है, स्वतन्त्रता है, इसके अन्दर ईश्वरत्व है। जैसे वह ईश्वर है और ईश्वर होने से न्याय-व्यवस्था का संचालक है। जैसे यहाँ किसी के पास अधिकार है न्याय करने का, इसलिए वह अधिकृत है, वह न्याय करता है, लोग उसके न्याय को मानते हैं। वैसे ही वह परमेश्वर न्यायकारी है, अधिष्ठाता है और उसके न्याय को भी लोग मानते हैं। मनुष्य जब उसके नियम को मानने लगता है, पालन करने लगता है, धार्मिक बनता है तो ऐसे व्यक्ति की आयु बढ़ती है। वह किसी अवस्था को देखकर दुःखी नहीं होता, परेशान नहीं होता। परमेश्वर के द्वारा दी गई परिस्थिति को सहज स्वीकार करता है। इस पूरे प्रकरण में बार-बार यह आग्रह किया गया कि मृत्यु को आप कैसे दूर करें और इस मृत्यु को दूर करने का यदि आप यत्न करेंगे तो इस यत्न को आप सफलतापूर्वक कर सकेंगे और वह परमेश्वर आपको दीर्घायु देने के लिए उतना ही उत्सुक है, बाध्य है जितना कि आप प्रयत्न करते हैं। इसलिए इस मन्त्र को हम इस दृष्टि से विचार करें तो यह मन्त्र हमारे लिए बहुत अच्छा मार्गदर्शक है।

जैसे पवन सब को सुख देता हुआ सब के रहने का स्थान हो रहा है वैसे ही विद्वान् को होना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.४१

कुछ तड़प-कुछ झड़प

प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'

कुल्लियाते आर्य मुसाफ़िर का प्रकाशन- परोपकारिणी सभा द्वारा 'कुल्लियाते आर्य मुसाफ़िर' का प्रकाशन एक आकस्मिक, परन्तु ऐतिहासिक घटना है। डॉ. धर्मवीर जी से श्री यशवन्त मेहता तथा श्री लक्ष्मण 'जिज्ञासु' जी ने इसके प्रकाशन के लिये आशीर्वाद व मार्गदर्शन माँगा तो धर्मवीर जी ने अपने प्रभाव से उन्हें इस कार्य के करने से रोककर इस परियोजना को सभा के लिये ले लिया। यह संस्करण कई दृष्टियों से दूरगामी परिणाम लाने वाला तथा ऐतिहासिक माना जावेगा। इस पर कोई और गुणी विद्वान् ही लिखेगा तो लाभप्रद होगा। मैं इस पर कुछ विशेष लिखने से बचता रहा।

आर्यजगत् में सभा के इस प्रकाशन की धूम तो खूब मची। अनेक सज्जनों की प्रतिक्रियायें चलभाष पर अब तक प्राप्त हो रही हैं। आज इस संस्करण पर कुछ लिखने की नई पहल करके आर्यसमाज के जाने-माने विद्वानों तथा नई पीढ़ी के लेखकों को इस गौरवपूर्ण शानदार ग्रन्थ पर नये सिरे से कुछ लिखने की कामना करता हूँ।

१. आर्य पुरुषो! सत्यार्थप्रकाश तथा पण्डित जी रचित जीवन-चरित्र के पश्चात् 'कुल्लियात' ने ही सर्वाधिक मानवों को आर्य-धर्म का दीवाना बनाया। आगे इस संस्करण की कुछ विशेषतायें नोट कीजिये। पं. लेखराम जी के बलिदान को सवा सौ वर्ष होने जा रहे हैं। कुल्लियाते आर्य मुसाफ़िर के इस संस्करण के दूसरे भाग में पण्डित जी का जीवन-परिचय जिस शैली में डॉ. वेदपाल जी ने लिखा है, ऐसा सुन्दर इतना संक्षिप्त लेख उन पर आज तक नहीं लिखा गया।

२. पण्डित जी पर प्रकाशित साहित्य में रक्तसाक्षी पं. लेखराम ग्रन्थ के पश्चात् पहली बार ही सभा के इस प्रकाशन में पूज्य पं. भगवद्दत्त जी, पं. देवप्रकाश जी तथा मुसलमान विद्वान् अब्दुला मेमार जी के पण्डित जी की महानता व देन पर उद्‌गार देकर इस संस्करण को और भी अधिक ऐतिहासिक बना दिया गया है।

३. पण्डित जी के साहित्य ने इस्लाम को, ईसाई मत को, पौराणिक मत को वैदिक धर्म के रंग में कहाँ तक रंगा है इसके प्रमाण देश-विदेश के साहित्य से विधर्मियों के शब्दों में यत्र-तत्र दिये गये हैं।

४. स्त्रियों को शूद्र मानने वाले पौराणिक हिन्दू जो जातिवादी व अस्पृश्यतावादी हैं वे सब काशी से कन्याकुमारी तक और सोमनाथ द्वारका से लेकर जगन्नाथ पुरी तक घर-घर में अपनी स्त्रियों के हाथ का बनाया गया भोजन सेवन करते हैं। कहाँ गया इनका सनातन धर्म? कौन बचा अस्पृश्यता से? पहली बार ही पण्डित जी का यह तर्क इस संस्करण में मुखरित (Highlight) किया गया है।

५. क्रिश्चियन मत दर्पण तथा पुनर्जन्म मीमांसा के वे तर्क, वे प्रश्न जो पूरे विश्व में सबसे पहले पण्डित जी ने संसार के सामने रखे हैं, जिन्हें कोई झुठला नहीं सका, उन्हें स्थूल अक्षरों में देकर ऐसा उजागर कर दिया गया है कि वैदिक दर्शन पाठकों के हृदय पर अंकित हो जाता है।

६. इस संस्करण की पाद टिप्पणियों को संग्रहीत कर लिया जावे तो आर्य धर्म के प्रचार में विशेष लाभ हो।

७. पण्डित जी वे तर्क, वे प्रश्न जिन्होंने फादर शूलब्रैड, सर सैयद अहमद खाँ, डॉ. इकबाल, मिर्ज़ा गुलाम अहमद, ग़ुलाम जेलानी तथा बड़े-बड़े विरोधियों को झकझोर कर वैदिक धर्म के द्वार पर लाकर खड़ा कर दिया उन पर प्रबुद्ध पाठकों का ध्यान केन्द्रित कर दिया है।

८. आर्यसमाज में एक स्वयंभू लेखक ने अपने एक लेख में १७-१८ बार पण्डित जी का नाम दिया है। एक बार भी उनके लिये 'जी' शब्द का प्रयोग नहीं किया और एक बार भी उनके लिये हुतात्मा या शहीद शब्द का प्रयोग नहीं किया। इस अनास्था तथा धर्म-द्वेष को यह संस्करण उखाड़ने में अवश्य सफल होगा। ऐसा हमें विश्वास है।

कुछ सोच समझकर लिखिये- आर्यसमाज के संबन्ध में देशवासियों की उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में ही यह धारणा बन चुकी थी कि आर्यसमाजी अप्रामाणिक बात न कहते हैं न लिखते हैं, अब आये दिन

ऐसे कथन व लेख हमारे सामने आते हैं कि पढ़-सुनकर बड़ा दु:ख होता है, यथा एक चित्र देकर यह नीचे लिखा गया कि ऋषि जी का यह चित्र कराची में खींचा गया। ऋषि कभी कराची गये ही नहीं। यह चित्र मेरे एक मित्र व सहपाठी प्राध्यापक मदनलाल जी के सौजन्य से प्राप्त हुआ। गुरदासपुर से डॉ. धर्मवीर जी तथा श्री विरजानन्द जी लेकर आये थे।

एक सज्जन के बारे पूछा गया है कि उनके संसार से चले जाने के पश्चात् उनके नाम से नये-नये लेख छपते रहते हैं। क्या आपने उनके जीवन काल में कभी उनका कोई लेख पढ़ा था? प्रश्नकर्त्ता सच्चाई को स्वयं जानता था, मैं उसे क्या उत्तर देता?

एक व्यक्ति शोलापुर मराठवाड़ा गये। उन्होंने चलभाष पर कई प्रश्न पूछे। उन्होंने कहा इधर प्राचार्य भगवानदास जी की तथा आपकी समाज-सेवा की बहुत चर्चा सुनी। आपकी इतिहास विषयक खोज व स्मरण शक्ति के बारे में भी आर्यपुरुष बहुत चर्चा करते सुने गये। डी.ए.वी. के इतिहास में भगवानदास जी का तो कहीं भी नहीं। उन्हें कहा, किसी ने क्या लिखा, क्या नहीं लिखा इस पर मुझे कुछ नहीं कहना। अपने बॉस को या नौकरी देने वालों को प्रसन्न करने के लिये कुछ लिखा जावे तो ऐसी सामग्री इतिहास नहीं हो सकती। उन्हें बताया गया कि विश्व पुस्तक मेले पर आर्य साहित्य में रुचि रखने वाले विदेशी पं. भगवद्दत्त जी के ग्रन्थों की सर्वाधिक माँग करते हैं, जिस इतिहास की आप बात करते हैं उनमें पण्डित जी पर कितने पृष्ठ की सामग्री है? उसने कहा, ''पंडित जी का उसमें नामोल्लेख ही नहीं।'' मुगल बादशाहों के दरबारी भी इतिहास के नाम पर अपने सम्राटों को प्रसन्न करने में लगे रहे। पापी पेट मनुष्य से बहुत कुकर्म करवा देता है।

भगवानदास जी की कृपा से समाज का डंका बज गया- परोपकारी के निष्ठावान् पाठकों की सेवा में भगवानदास जी की समाज-सेवा की एक स्वर्णिम घटना रखते हुये हमें गौरव होता है। शोलापुर के कुछ प्रभावशाली लोग एक गोरे अंग्रेज साधु का भाषण करवाने के लिये उनसे मिले। उन्होंने कहा, आप प्रो. जिज्ञासु जी से मिलें। वह आर्ययुवक समाज में गोरे अंग्रेज महात्मा का प्रवचन करवा देंगे। ऋषि के दीवाने दूरदर्शी भगवानदास जी ने मुझे बुलाकर कहा, ''चेले उस गोरे को लेकर आपसे मिलेंगे। यदि वह हमारे देश के हितों और सिद्धान्तों के विपरीत कुछ कहे तो आप उसके कथन का प्रतिवाद कर देना।''

छात्रावास में विद्यार्थी भारी संख्या में बाबाजी को सुनने आ गये। उसके व्याख्यान का विषय कि आप भारत को आत्मशक्ति सम्पन्न देश बनाकर दिखावें। Atomic Power बनाने से भारत का गौरव न होगा। व्याख्यान की तान इसी पर टूटती रही। व्याख्यान समाप्त होते ही मैं धन्यवाद देने खड़ा हुआ तो मैंने कहा, ''यह व्याख्यान तो इंग्लैण्ड, फ्रांस, अमेरिका, रूस में देना चाहिये जो एटमबम बनाते हैं। एटॉमिक खोज में लगे हैं। हमारा देश तो चीन व पाकिस्तान जैसे देशों के पड़ोस में है। हमारी सुरक्षा की आपको क्या चिन्ता! कॉलेज के छात्रों पर मेरे कथन का प्रभाव पड़ा।''

बाबाजी के भारतीय भक्त मुझसे उलझ पड़े कि महात्मा का अपमान कर दिया। छात्रावास के वार्डन ने भी उन्हीं का साथ दिया। यह चर्चा नगर तक जा पहुँची। दो-तीन दिन में बाबाजी को संदिग्ध गतिविधियों के कारण पुलिस ने बन्दी बना लिया। उसके पास से बहुत सी विदेशी मुद्रा पकड़ी गई। स्थानीय पत्रों में मुखपृष्ठ पर यह समाचार विस्तार से छपा। स्थूलाक्षरों में यह शीर्षक छपा कि डी.ए.वी. कॉलेज में इसके भाषण पर आपत्ति की गई। आर्यसमाज ने पहले ही ताड़ लिया था कि यह संदिग्ध व्यक्ति है। न जाने आर्यसमाजियों को इसकी वास्तविकता का आभास कैसे हो गया।

भगवानदास जी के समक्ष फोन आने लगे- भगवानदास जी को चलभाष आने लग गये कि आपने कैसे ताड़ लिया कि यह कोई संदिग्ध गुप्तचर है? कॉलेज के प्रोफेसर मेरे से उस दिन की सब जानकारी माँगने लगे। 'संचार समाचार' दैनिक में छपे विस्तृत समाचार ने शोलापुर मराठवाड़ा में आर्यसमाज का ऐसा डंका बजा दिया जो सैकड़ों व्याख्यानों से भी कहीं भारी पड़ा। यह भगवानदास जी की दूरदर्शिता का सारा फल था। आर्यसमाज के लोग संस्थाओं के कीच बीच फँसकर ऐसे प्रेरक इतिहास का मूल्य व महत्त्व नहीं समझते। मैंने तो अपनी एक पुस्तक में

पहले भी इसे प्रकाशित प्रसारित किया था। अब उपरोक्त भाई के चलभाष पर भगवानदास जी विषयक प्रश्न पाकर यह अविस्मरणीय घटना स्मरण हो आई।

पं. लेखराम जी और ऋषि जीवन- श्री मनमोहन कुमार जी ने भक्तिभाव से इस विषय पर एक लम्बा तथा अच्छा लेख लिखा है, परन्तु यह लेख फिर भी अधूरा है। ऋषि के बलिदान के तुरन्त पश्चात् जब ऋषि जीवन की माँग बहुत जोर से व जोश से उठी तो कई महानुभावों से आर्य जनता ने इस करणीय कार्य की आस लगाई। लाला लाजपतराय तथा पण्ड्या मोहनलाल जी पर दृष्टि टिकी। दोनों ने सूचनायें निकालकर लोगों से घटनायें व जानकारी भेजने को कहा। दोनों के छपे विज्ञापनों के छायाचित्र 'सम्पूर्ण जीवन-चरित्र' में हमने दे दिये। यह कार्य घर बैठकर मेज सजा कर होने वाला नहीं था। कोई तिनका न तोड़ सका। एक पृष्ठ भी न लिखा गया।

तब पं. लेखराम जी की लेखनी व शोध-कार्यों की धाक थी। वह घर छोड़कर मैदान में उतर पड़े। लम्बी-लम्बी यात्राओं में रुग्ण भी हुए। अंग्रेजी नहीं जानते थे, परन्तु जो भाषायें नहीं जानते थे, उनके पत्रों के उद्धरण प्रामाणिक रीति से दिये। इस युग में श्री कुशलदेव जी नासिक, मुम्बई में ऋषि के आगमन की तिथियों की खोज में भयङ्कर चूक कर गये। मैंने उनके श्रम व लगन को जानते हुये उन्हें प्रामाणिक मान लिया। शीघ्र ही ऋषि के काल के महाराष्ट्र के कुछ पत्रों तक श्री राहुल के कारण हमारी पहुँच हो गई। तब मराठी अंग्रेजी पत्रों के प्रमाणों से पं. लेखराम जी लिखित तिथियों व घटनाओं की पूरी-पूरी पुष्टि हुई।

अंग्रेजी जानने का मिथ्या अभिमान करने वालों ने तो पं. लेखराम जी की प्रामाणिक खोज में हेर-फेर करके इतिहास प्रदूषित करने का पाप किया। बनावटी इतिहास गढ़ने में इन्हें देर न लगी। असत्य ने सत्य का स्थान लेकर दिखा दिया यथा ऋषि के जीवनकाल में जोधपुर आर्यसमाज था ही नहीं। एक भद्रपुरुष ने ऋषि के कपोल कल्पित संवाद के साथ जोधपुर में समाज स्थापित करवा दिया। यह गप्प गढ़ने की कला का चमत्कार ही तो है।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की उपेक्षा- श्री देवेन्द्र बाबू पं. लेखराम जी के बलिदान के कई वर्ष पश्चात् सामग्री की खोज के लिये निकले। उनसे कई वर्ष पूर्व पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी टंकारा, गुजरात के कई नगरों तथा देशभर में ऋषि जीवन की खोज को निकले। इतिहासमर्मज्ञ आर्य संन्यासी नेता की ऋषि-जीवन की खोज के लिये सेवाओं का उल्लेख करते हुये न जाने आर्यसमाज के कई तथाकथित इतिहासज्ञों को क्यों कष्ट होता है? उन जैसा ऋषि-जीवन की कथा करने वाला हमने न सुना है और न कोई देखा है। श्रीयुत् मनमोहन जी के लेख से ये पंक्तियाँ लिखने की प्रेरणा हुई।

प्रियंका वाड्रा गाँधी का चीत्कार- उ.प्र. में एक घटना घटने पर संबन्धित लोगों से मिलने आप गईं। सरकार ने वहाँ जाने से रोका तो आपने बहुत चीत्कार की, मुझे जाने से कैसे व क्यों रोका जा रहा है? हमने उनके ऐसे सब भाषण व समाचार पढ़े। इन्हें क्या पता कि नेहरू जी के राज में इससे भयङ्कर घटनायें घटीं। जब बिना किसी प्राथमिकी (F.I.R.) के मुझे अमानवीय यातनायें दी गईं। महीनो कोर्टों में नेहरू-राज में उपस्थित होने की यातनायें सहनी पड़ीं, तब पुलिस के बूचड़खाने में मेरे ज्येष्ठ भ्राता यशजी मेरा पता करने गये। कोई दोष तो मुझ पर लगाया न गया, परन्तु नेहरू राज में मेरे सगे भाई को मुझे मिलने क्या देखने तक भी न दिया गया।

मुझे पुलिस की बन्द गाड़ी में मेडिकल जाँच के लिये ले जाया गया। गाड़ी जाकर कहीं रुकी। मेरे अनुभवी पिता जी ने ताड़ लिया कि इसी जीप में उनका पुत्र है। जीप के पास सड़े-गले केले बिक रहे थे। मेरा मुँह देखने के लिये तड़पते हृदय से केले क्रय करने का नाटक करके मेरे पिताजी जीप पर बार-बार दृष्टि डाल कर मुझे देखना चाह रहे। मुझे जीप के भीतर से वह दिखाई दे रहे थे। पिताजी किसके लिये सड़े-गले केले ले रहे हैं।

हिन्दू सिखों में वैमनस्य बढ़ाने के लिये तब नेहरू-कैरोंशाही ने एक भी हिन्दू पुलिस कर्मचारी को मेरे पास फटकने न दिया। बस एक अपवाद था जिसने आर्यसमाज तक यह जानकारी पहुँचा दी कि इसे बचा लो, मार-मार कर-यातनायें देकर दो एक दिन में इसे पागल बनाकर पुलिस छोड़ेगी। यह सूचना श्री वीरेन्द्र तक भी पहुँची। मैं

आज आपके बीच में हूँ। क्या-क्या लिखें?

श्रीमती वाड्रा और सुन लें। नया बाँस हरियाणा में सुमेरसिंह की हत्या करके सरकार ने शव को उस ग्राम में तो भेज दिया। श्री घनश्यामसिंह गुप्त सरीखे वरिष्ठ तथा प्रख्यात स्वतन्त्रतासेनानी, क्रान्तिकारी योद्धा स्वामी अभेदानन्द जी (जो नेहरू जी के साथ जेल में रहे) इन दोनों को नेहरू जी की नाक के ठीक नीचे दिल्ली के पास दाहकर्म संस्कार का दर्शक तक न बनने दिया गया। यह है नेहरू राज के लोकतन्त्र का चित्र!

महात्मा आनन्द स्वामी का ऐतिहासिक लेख और आर्यसमाज का पिछड़ापन- इस शीर्षक के नीचे आज महात्मा आनन्द स्वामी जी के एक ऐतिहासिक लेख की चर्चा छेड़ कर आर्यसमाज के समर्पित सेवकों को झकझोरने के लिये आर्यसमाज के पिछड़ेपन का चित्र चित्रण करना पड़ रहा है। आज श्रीयुत् पूनम सूरी जी का लाभ उठाने के लिये हर कोई महात्मा आनन्दस्वामी की माला फेरने में लगा है। उनकी मूर्तियाँ बनवाकर चाटुकारों ने अपने घरों में मूर्तियों बिठाकर चुपचाप प्राण प्रतिष्ठा कर ली।

गाँधी बापू ने सन् १९२४ में आर्यसमाज, वेद, ऋषि दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द पर भयङ्कर प्रहार करते हुये एक लेख में बड़ी घृणित भाषा में हिन्दुओं के लिये लिखा, मालाबार में क्रूर मोपलों ने क्या किया? वहाँ क्या हुआ? यह कौन जानता है? आर्य विद्वानों ने गाँधी के प्रहार का अच्छा प्रतिकार करते हुए ''मालाबार में क्या हुआ, यह कौन जानता है? इसका तथ्यों के आधार पर स्मरणीय उत्तर दिया। यह तथ्य किसने उपलब्ध करवाये? इसे आज कौन जानता है?''

खुशहालचन्द जी का वह लेख- डी.ए.वी. के मूर्तिकार निर्देशक प्रिंसिपल लोगों को इस बात से क्या लेना-देना कि यह लेख किसका था। हम बताये देते हैं कि यह ९-१० पृष्ठों का लेख महाशय खुशहालचन्द लिखित था और गाँधी जी के विषैले लेख से बहुत पहले यह छपकर प्रचारित हो चुका था। गाँधी बापू का दुस्साहस केरल से मालाबार का आँखों देखा वृत्तान्त प्रादेशिक सभा देश के कोने-कोने में पहुँचा चुकी थी तथापि ''कौन जानता है?'' यह प्रश्न गाँधी पूछ रहे थे। अपने भवनों व संस्थाओं पर इतराने वाले इन मूर्तिकारों व आनन्द स्वामी जी की तोतारटन लगाने वालों से कहो, दिखाओ, लाओ-वह लेख कहाँ है? कोई डी.ए.वी. के आर्काइव की बाँसुरी बजा रहा था तो कोई दिल्ली में एक अलभ्य स्रोतों के केन्द्र का राग अलाप रहा था। आर्यसमाज का ऐसा पिछड़ापन! कि ऐसा लेख कहीं किसी संस्था के पास न हो!

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज और पूज्य उपाध्याय जी का यह मानसपुत्र स्थूल अक्षरों में उस ऐतिहासिक लेख का हिन्दी अनुवाद ट्रैक्ट रूप में प्रकाशित करने की व्यवस्था कर रहा है। इसे भूमण्डल प्रचारक मेहता जैमिनि जी को समर्पित किया जा रहा है। वह भी तब मालाबार सेवा के लिये पहुँचे थे। यह document आप कहाँ से खोज लाये? इसका उत्तर क्या दिया जावे। यह तो महाशय कृष्णजी, पूज्य आनन्द स्वामी जी, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, श्रद्धेय उपाध्याय जी, मेरे ताया जी, मेरे पिताजी, मेरे कुल के बड़े ही बता सकते थे कि इस दस्तावेज को कैसे खोज पाया? मैं कहाँ से ले आया। महात्मा आनन्द स्वामी की टोली के मालाबार को प्रस्थान पर एक गीत में ये पंक्तियाँ लिखी थीं-

सिर पै बाँधे कफन चल दिये दिलजले।
चल दिये दिलजले, मन में ले वलवले।।
देखकर दंग दुनिया हुई क्या हुआ!
ये थे स्वामी दयानन्द के मनचले।।

'आपका चित्र' कहानी- कभी मुंशी प्रेमचन्द जी की एक कहानी 'आपका चित्र' शीर्षक से हिन्दी में अनुवाद करके छपवाई थी। प्रेमचन्द के नाम पर खाने-कमाने वाले मेरे विरोध में खड़े हो गये कि प्रेमचन्द जी ने ऋषि दयानन्द पर ऐसी कोई कहानी लिखी ही नहीं। तब मेरे पक्ष में श्री इन्द्रजित् देव के अतिरिक्त आर्यसमाज में एक भी व्यक्ति नहीं बोला कि जिज्ञासु गप्प गढ़ने वाले लेखक नहीं, पं. लेखराम का वंशज है। प्रामाणिक साहित्य का सृजन करता है। मेरे द्वारा अनूदित सम्पादित कहानी छपते ही प्रेमचन्द विशेषज्ञों के पत्र आने लग गये कि हमें इसके प्रकाशन का अधिकार दो। मैंने कई प्रदेशों के कई लेखकों को एक पैसा लिये बिना यह अधिकार दिया।

अब तो आर्यसमाज में भी मुंशी प्रेमचन्द के विशेषज्ञ सामने आ रहे हैं। यह आनन्ददायक समाचार मिला है। यह कहानी थी व है। 'इसके तीन अध्याय थे' यह गप्प है। इतिहास प्रदूषण है। श्री प्रेमचन्द 'प्रकाश' क्रान्तिकारी आर्यपत्र के लिये नियमित लिखा करते थे। प्रकाश के जन्मदाता महाशय कृष्ण जलियाँवालाबाग काण्ड के समय कारागार में ठूँसे गये। तीन अध्याय की कहानी गढ़ने वाले ने अपनी जानकारी का स्रोत न जाने क्यों छुपा रखा है। तीन अध्यायों की कल्पना करने वाले ने मूर्तिपूजा व चित्रपूजा का ऐसा भावपूर्ण चित्रण इससे पूर्व कहीं पढ़ने को नहीं मिलता- यह लिखकर हास्यास्पद खोज परोस दी है। आर्य गजट, आर्यसमाचार व आर्य पत्रिकाओं में ऐसे लेख छपते ही रहते थे। सद्धर्मप्रचारक व आत्माराम जी के लेख इसकी साक्षी देते हैं। आर्यसमाज की शोभा का हम ध्यान रखें तो ठीक है। अपनी रिसर्च को मर्यादा में बाँधकर रखें तो व्यक्ति व समाज दोनों की शोभा बढ़ेगी।

१. कुल्लियाते आर्य मुसाफिर (पं. लेखराम ग्रन्थ संग्रह)- दो भाग

लेखक- पण्डित लेखराम

सम्पादक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर, पंजाब

मूल्य- रुपये ~~९००~~/- **छूट पर**- ६००/-

२. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (दो भाग में)

मूल्य - रुपये ~~८००~~/- **छूट पर** - ५००/-

३. अष्टाध्यायी भाष्य- ३ भाग (१ सैट)

भाष्यकार- महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य- रुपये ~~५००~~/- **छूट पर**- ३५०

पुस्तकें हेतु सम्पर्क करें:-

वैदिक पुस्तकालय, अजमेर से क्रय की जाने वाली पुस्तकों की राशि ऑनलाइन जमा कराने हेतु

खाता धारक का नाम - **वैदिक पुस्तकालय, अजमेर। दूरभाष - 0145-2460120**

बैंक का नाम - **पंजाब नेशनल बैंक, कचहरी रोड, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या - **0008000100067176**

IFSC - PUNB0000800

गोष्ठी का आयोजन

वैदिक वाङ्मय, आर्ष साहित्य, आर्यभाषा हिन्दी (अन्य भारतीय भाषाओं) के प्रचार-प्रसार व वैदिक समाज व्यवस्था स्थापित करने के लिए कटिबद्ध आर्य लेखक परिषद् द्वारा दिनांक ७ से ८ सितम्बर २०१९ दो दिवसीय गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

कार्यक्रम परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान, अजमेर में होगा।

मनुष्यों को चाहिये कि सदा यज्ञ का आरम्भ और समाप्ति को करें और संसार के जीवों को अत्यन्त सुख पहुँचावें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.६२

ऐतिहासिक कलम से....

वेद और विकासवाद

पं. यश:पाल सिद्धान्तालंकार

यह लेख स्व. श्री यश:पाल जी सिद्धान्तालंकार की पुस्तक 'वैदिक सिद्धान्त' से लिया गया है। पं. सिद्धान्तालंकार जी आचार्य रामदेव (गुरुकुल कांगड़ी) के सुपुत्र थे। उन्हें आचार्य रामदेव जी की सैद्धान्तिक विचारधारा विरासत में मिली। यह लेख उसी विरासत का एक अंश है। यह लेख लोगों के मनोभावों को परिवर्तित कर वेद का प्रकाश फैलाने में सफल होना, ऐसा हमारा विश्वास है। -सम्पादक

वेद ईश्वरीय ज्ञान है। बिना प्रारम्भिक ज्ञान के मानव-जाति कभी भी उन्नति नहीं कर सकती। जिस प्रकार बिना दियासलाई के बारूद में आग नहीं लग सकती और बिना रगड़ के दियासलाई भी नहीं जल सकती उसी प्रकार मनुष्य की स्वाभाविक बुद्धि भी बिना ज्ञान के विकसित नहीं हो सकती। संसार की असभ्य जातियों का इतिहास तथा वर्तमान अवस्था इस बात के ज्वलन्त उदाहरण हैं। जैसे बिना सिखाये मनुष्य का बालक केवल बुद्धि के आधार पर साधारण व्यावहारिक बात जानने में भी असमर्थ है। इसी प्रकार असभ्य जातियाँ भी बिना सभ्य जाति के संसर्ग के विकसित तथा उन्नत नहीं हो सकतीं। इस बीसवीं सदी में भी जिसे कि सभ्यता का सबसे उन्नतकाल कहा जाता है ऐसी बीसियों जातियाँ विद्यमान हैं जिनके लोग १० तक गिनना तथा भोजन बनाने की कला भी नहीं जानते। कच्चा मांस खाकर तथा निपट नंगे रहकर ही वे अपने दिन काट रहे हैं। ज्ञान गुरु-परम्परा के अधीन है। बिना गुरु के कोई भी मनुष्य ज्ञानवान् नहीं हो सकता। यहाँ तक कि मनुष्य का बच्चा बिना सिखाये केवल अपनी बुद्धि के आधार पर तैरना भी नहीं जान सकता, जबकि पशु का बच्चा पैदा होने के साथ ही तैरने लग जाता है। पशु को प्रभु ने स्वाभाविक बुद्धि (Instinct) दी है, जिसके आधार पर पशु जीवनोपयोगी सब व्यवहार सिद्ध कर लेता है, परन्तु मनुष्य के बालक को साधारण-सी बात भी बिना सिखाये नहीं आ सकती। अत: हमारे लिये यह मानना अनिवार्य है कि सृष्टि के प्रारम्भ में भी बिना परमात्म ज्ञान के मनुष्य जाति उन्नत नहीं हो सकती। जिस प्रभु ने मानव-जाति के कल्याण के लिये सृष्टि के प्रारम्भ में सूर्य, चन्द्रमा, वायु, पृथ्वी, वनस्पतियाँ, जलादि आवश्यक पदार्थों की उत्पत्ति की, उसी परम कारुणिक भगवान् ने मनुष्य-बुद्धि के लिये तथा धर्माधर्म, कर्त्तव्याकर्त्तव्य, सदसद् विवेक के लिये वेद का ज्ञान दिया। जैसे कोई भी सरकार अपने शासन को सुचारु रूपेण चलाने के लिये नियमों का निर्माण करती है, उसी प्रकार प्रभु ने ऋत् तथा सत्य के ज्ञान के लिये वेद का ज्ञान दिया है। जैसे सूर्यादय में कोई परिवर्तन नहीं हुआ उसी प्रकार परमात्मज्ञान भी अखण्ड तथ सदा एकरस है। सृष्टि के प्रारम्भ में परमात्मा ने जो ज्ञान दिया वही ज्ञान सदा चला आता है। उसमें परिवर्तन की कोई आवश्यकता नहीं।

विकासवाद की समीक्षा-

आजकल यूरोप में विकासवाद (Evolution) के सिद्धान्त का बड़ा प्रचार है। इसके मानने वालों का यह सिद्धान्त है कि मनुष्य वानर की औलाद है और पशु से विकसित होकर ही इस अवस्था तक पहुँचा है। साथ ही इनका यह भी मन्तव्य है कि मनुष्य प्रारम्भ में जङ्गली था और धीरे-धीरे विकास हुआ और मनुष्य इस अवस्था तक पहुँचा है। इसलिये किसी भी ईश्वरीय-ज्ञान के मानने की आवश्यकता नहीं। मनुष्य अपनी बुद्धि के आधार पर संसार में सब प्रकार की उन्नति कर सकता है। विकासवाद के सिद्धान्त ने यूरोप में ईसाई मत की नींव हिला दी और ईसाई मत का भवन इस सिद्धान्त के सामने डगमगा गया। आज शारीरिक विकास (Physical Evolution) के विषय में हम विशेष नहीं लिखना चाहते क्योंकि उसका हमारे विषय के साथ बहुत संबन्ध नहीं है। तथापि इस विषय में प्रसङ्गागत कुछ विद्वानों के आधार पर इतना लिख देना आवश्यक है कि विज्ञान की उन्नति ने इस सिद्धान्त का भी प्रतिवाद कर दिया है और इस मत का जोर अब यूरोप में भी कम हो रहा है। ब्रिटिश म्यूजियम के डॉक्टर एथरिज (Ethridge) लिखते हैं कि-

In all this great museum there is not a particle of evidence of transmutation of species. Nine-tenth of the talk of evolution is sheer nonsense not founded on observation and wholly unsupported by facts.

अर्थात् सारे ब्रिटिश म्यूजियम में जाति परिवर्तन का कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं होता। विकासवाद के सिद्धान्त के लिये कोई प्रमाण नहीं। यह कोरी कल्पना है। प्रोफेसर अर्विन का कथन है कि–

"No instance of the change of species into another has ever been recorded by man."

अर्थात् जाति–परिवर्तन का मनुष्य के पास कोई प्रमाण नहीं है। प्रोफेसर जे.ए. टॉमसन लिखते हैं कि–

We do not know whence he emerged ..... nor do we know how man arose ..... for it must be admitted that the factors of evolution of man partake largely of the nature of maybe's, which has no permanent position in science."

अर्थात् हम नहीं बतला सकते कि मनुष्य का प्रादुर्भाव कहाँ से तथा कैसे हुआ, परन्तु इतना हमें स्वीकार करना पड़ेगा कि विकासवाद के सिद्धान्त की वैज्ञानिक दृष्टि से कोई स्थिर स्थिति नहीं है। जे. डब्लू डौसन का कथन है कि–

"No remains of intermediate forms are yet known to science. The earliest known remains of man are still human and tell us nothing as to the previous stages of development."

अर्थात् जाति–परिवर्तन का विज्ञान के पास कोई प्रमाण नहीं है। अब तक यही साबित हुआ कि मनुष्य प्रारम्भ से इसी रूप में है। सिडने कालेट अपनी 'स्क्रिप्चर ऑफ ट्रूथ' पुस्तक में लिखते हैं कि–

Science is equally explicit in its testimony that instead of man having slowly improved from the lower to the higher, the tendency is exactly in the opposite direction."

अर्थात् विज्ञान के पास इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि मनुष्य नीचे से ऊपर की तरफ नहीं बढ़ा। सत्य इसके विपरीत है। इस प्रकार से कई चोटी के विद्वानों की सम्मति के आधार पर हमने यह दिखलाया कि शारीरिक विकास के लिये भी विद्वानों के पास पर्याप्त प्रमाण नहीं है। बौद्धिक विकास के लिये उसी प्रकार से विकासवादियों के पास कोई प्रमाण नहीं। हम इस बात को सप्रमाण सिद्ध करने का यत्न करेंगे कि जहाँ संसार ने कई बातों में उन्नति की है वहाँ बहुत–सी बातों में संसार ने अवनति भी की है। यदि विकासवाद का सिद्धान्त ठीक मान लिया जाय तो मनुष्य जाति का इतिहास उन्नति का ही इतिहास होता। परन्तु हम देखते हैं कि नैतिक तथा आध्यात्मिक दृष्टि से तो संसार में अत्यन्त पतन हुआ है जिसका वर्णन भी लेखनी से करना असम्भव है। शारीरिक बल में भी मनुष्य जाति दिनोंदिन ह्रास को प्राप्त हो रही है। इसके अतिरिक्त प्राकृतिक क्षेत्र में भी पूर्व समय में आजकल के समान ही उन्नति थी। प्राकृतिक सभ्यता के कई क्षेत्रों में पूर्वकाल में आजकल से भी अधिक उन्नति थी जैसा कि आगे चलकर हम सिद्ध करेंगे। मानव जाति का इतिहास परिवर्तन का इतिहास है। जातियों का उत्थान तथा पतन स्वाभाविक है। भारतवर्ष जगद्गुरु है। किसी समय इसकी सभ्यता तथा संस्कृति का सूर्य भूमण्डल की चारों दिशाओं को आलोकित कर रहा था, परन्तु वही भारत आज अवनति के गड्ढे में गिरा हुआ है। किसी समय रोम, असीरिया, बेबिलोनिया, ग्रीस इत्यादि देश उन्नति की चरम सीमा तक पहुँच गये थे, परन्तु आज इनकी सभ्यता प्रायः मटियामेट हो चुकी है। इस प्रकार हम इस परिणाम पर पहुँचते हैं कि विकास का सिद्धान्त ऐतिहासिक कसौटी पर कसे जाने पर सत्य सिद्ध नहीं होता। भारत तथा ग्रीस ने किसी समय सभ्यता तथा विद्या के हर एक क्षेत्र में अपूर्व तथा अद्भुत उन्नति की थी और आज यूरोप अपनी सारी शक्ति के साथ भी उस उन्नति

तक नहीं पहुँच सका। उदाहरणार्थ, कुछ बातों पर हम यहाँ प्रकाश डालना चाहते हैं–

ज्योतिष शास्त्र

या गौर्वर्तनिं पर्येति निष्कृतं पयो दुहाना व्रतनीरवारतः।
सा प्रब्रुवाणा वरुणाय दाशुषे देवेभ्यो दाशद्धविषा विवस्वते।।

ऋग्वेद १०।६५।६।।

(या) जो (गौः) पृथ्वी (व्रतनीः) अपने नियम का पालन करती हुई (दाशुषे वरुणाय) दानी और श्रेष्ठ जनों के लिये (अवारतः) चहुँ ओर धाराप्रवाह से (निष्कृतं) निरन्तर (पयो दुहाना) अन्न, रस, फलादि भोग्य पदार्थों को उत्पन्न करती हुई (दाशत्) अनेक प्रकार की सुख–सामग्रियों को पैदा करती है, (सा) वह गौ (प्रबुवाणा) परमात्मा की महिमा का उपदेश करती हुई (वर्तनिं) अपनी कक्षा में (विवस्वते) सूर्य के चारों तरफ (पर्येति) घूमती है।

(२) आयं गौ पृश्निरक्रमीदसदन्मातरं पुरः।
पितरं च प्रयन्त्स्वः।

यह (गौः) पृथिवी (मातरं) जननीस्वरूप जल को (असदन्) प्राप्त होती हुई अर्थात् उसे अपने साथ लेती हुई (च) तथा (पितरं स्वः) निःशेष प्राणियों को पितृवत् उत्पन्न तथा पालन करनेवाले सूर्यलोक के (पुरः)चारों तरफ (प्रयन्) चलती हुई (पृश्निः) अन्तरिक्ष में (अक्रमीत्) भ्रमण करती है।

(३) अहस्ता यदपदी वर्धत क्षाः शचीभिर्वेद्यानाम्।
शुष्णं परि प्रदक्षिणद् विश्वायवे नि शिश्नथः।।

ऋग्वेद १०।२२।१४।

(क्षाः) यह पृथिवी (यद्) यद्यपि। (अहस्ता) हस्तरहित (अपदी) तथा पैर से भी शून्य है तथापि (शुष्णं परि) सूर्य के चारों तरफ (प्रदक्षिणत्) प्रदक्षिणा करती हुई (वेद्यानाम्) जानने योग्य परमाणु या पञ्चमूल तत्त्वों की (शचीभिः) क्रियाओं से प्रेरित होकर (वर्धत) अपनी कक्षा में आगे बढ़ रही है। (विश्वायवे) विश्व के उपकारार्थ (नि शिश्नथः) हे ईश्वर, तूने ऐसा प्रबन्ध किया है।

भपंजरः स्थिरोभरेवावृत्यावृत्याप्रतिदैवसिकौ।
उदयास्तमयौ सम्पादयति ग्रह नक्षत्राणाम्।

आर्यभट्ट।।

अर्थात् आकाश स्थिर है। पृथिवी ही बार–बार घूम कर प्रतिदिन ग्रहादि के उदयास्त का सम्पादन करती है। आकाश क्यों घूमता दिखाई देता है। इसका उत्तर ज्योतिषी आर्यभट्ट ने इस प्रकार से दिया है।

(५) अनुलोमगतिर्नौ स्थः पश्यत्यचलं विलोमगं यद्वत्।
अचलानीमानि तद्वल्लंकायां समपश्चिमगानि।।

अर्थात् जैसे नौका में बैठकर तटस्थ वस्तुएँ प्रतिकूल दिशा में जाती हुई दीखती हैं, वैसे ही भूलोकवासियों को सूर्यादि स्थिर गगनस्थ पिण्ड लङ्का से ठीक पश्चिम को जाते हुए दीखते हैं।

उपरोक्त वचन से यह स्पष्ट है कि जहाँ विज्ञान ने पृथिवी के घूमने का सिद्धान्त अर्वाचीन काल में मालूम किया है, वहाँ वेद अनादि काल से इस सत्य की घोषणा कर रहे हैं।

आयुर्वेद

आजकल मेडिकल साइंस ने बहुत उन्नति की है, परन्तु भारत का प्राचीन इतिहास पढ़ने से यह स्पष्ट हो जाता है कि प्राचीन भारतीय भी इस विषय में सीमा तक पहुँचे हुए थे।

"In surgery, too, the Indians seem to have attained a special proficiency and in this department, European surgeons might, perhaps, even at the present day still learn some things from them, as indeed they have already borrowed from them the operation of Rhinoplasty."

अर्थात् शल्यतन्त्र में भी प्राचीन भारतीयों ने अपूर्व योग्यता प्राप्त की थी। आजकल के यूरोपियन सर्जन अब भी उनसे कई बातें सीख सकते हैं। उन्हें बनावटी नाक लगाने की कला भी मालूम थी।

"The surgical instruments of the Hindus are sufficiently sharp, indeed, as to be capable of dividing a hair longitudinally"

- Ancient and Modern India. Vol. 11 P. 346

अर्थात् प्राचीन आर्यों के चिकित्सा सम्बन्धी शस्त्र भी इतने तेज थे कि वे एक बाल के बीच में से लम्बाई के रुख दो टुकड़े कर सकते थे।

The surgery of the ancient Indian physicians was bold and skilful. They conducted amputations, arresting the bleeding by pressure, a cup-shaped bandage and boiling oil, practiced litholomy, performed operations in the abdomen and uterus, cured hernia, fistula, piles, set broken bone and dislocation and were dexterous in the extractions of foreign substances from the body. A special branch of surgery was devoted to rhinoplasty or operation for improving deformed ears and noses and forming new ones, a useful operation which European surgeons have now borrowed. The ancient Indian surgeons mention a cure for neuralgia, analogous to the modern cutting of fifth nerve above the eye-brow. They were expert in midwifery, not shrinking form the most critical operation and in the disease of women and children.

-Indian Gazettier, "India." Page 220.

अर्थात् प्राचीन भारतीय चिकित्सक शिल्पविद्या में अत्यन्त कुशल थे। वे पथरी, हर्निया, बवासीर इत्यादि बीमारियों का इलाज बड़ी कुशलता तथा सफलता से कर सकते थे। टूटी हुई तथा स्थानच्युत हड्डियों का इलाज भी कर सकते थे। स्त्रियों तथा बच्चों की बीमारियों के भी पूर्ण चिकित्सक थे।

भोज प्रबन्ध में लिखा है कि राज भोज के सिर में बहुत दर्द होता था। बहुत चिकित्सा करने पर भी उसे आराम न हुआ। एक दिन उसके दरबार में दो वैद्य आये, जिन्होंने दिमाग का ऑपरेशन किया और फिर संजीवनी से उसकी मूर्च्छा को दूर कर दिया।

इसी प्रकार जीवक महात्मा बुद्ध का निजी वैद्य था। उसने भी एक बार बड़ी कुशलता से उनकी खोपड़ी का ऑपरेशन (Cranical surgery) किया था। (History of Human Medical Science by Thakoresahib of Gondal.)

गृह-निर्माण विद्या

सर जॉन मार्शल जो कि (Director-General, Archeology in India) थे, लिखते हैं कि सिन्ध में खोज करने पर पुराने मकानों के जो खण्डहरात मिलते हैं उनको देखने से यह स्पष्ट हो जाता है कि गृह-निर्माण विद्या में भी प्राचीन आर्य कमाल कर चुके थे।

"The Drainage system in particular is extraordinarily well-developed. Every street and alley, way and passage seems to have had its own course-conducts of finally chiselled brick, laid with precision which could hardly be improved upon. Most of the buildings are divided into good sized rooms, floored over with brick and provided with covered drains, connected with larger drains in the side streets. The existence of these roomy and well-built houses and relatively high degree of luxury seem to be token of a social condition of the people much in advance of what was then prevailing in Mesopotamia or Egypt.

सिन्ध में जमीन के अन्दर एक शहर खण्डहरात के रूप में मिला है। उसका वर्णन करते हुए सर मार्शल लिखते हैं कि मकानों में गन्दे पानी को बाहर करने की नालियों का ढंग इतना पूर्ण है कि उस विषय में और सुधार करने की गुंजाइश ही नहीं। मकानों में स्नान-गृह, कूप

इत्यादि अलग-अलग हैं। घरों के अन्दर की नालियों का सम्बन्ध बाहर की नालियों के साथ है और वे नालियाँ ऊपर से ढकी हुई हैं। इन मकानों में आराम का सब सामान पाया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि उनकी सामाजिक अवस्था मैसोपोटामिया अथवा मिस्र से बहुत उन्नत थी।

"The gold ornaments are so well-furnished and so highly polished that they might have come out of a Bond Street jeweller of London today than from a pre-historic house of 5000 years ago."

अर्थात् जो सोने के आभूषण प्राप्त हुए हैं वे इतने सुन्दर हैं कि ऐसा प्रतीत होता है कि वे ५००० साल पूर्व के नहीं हैं, अपितु इस युग में लन्दन के सबसे अच्छे जौहरी की दुकान के बने हुए हैं।

"The ancient Indian erected buildings the solidarity of which has not been overcome by the evolution of thousands of years"

- "British History of India."

प्राचीन भारतीयों ने जो मकान बनाये थे, वे हजारों सालों के व्यतीत हो जाने पर भी अपनी सुन्दरता को कायम रखे हुए हैं। अजन्ता की गुफाओं का हाल पढ़ने से मनुष्य हैरान हो जाता है कि जिस प्रकार से पहाड़ों में गुफाएँ बनाकर बौद्धकाल में उन पर इतनी सुन्दर चित्रकारी बनाई गई है, जो कि सैंकड़ों वर्षों के बीत जाने पर भी उसी प्रकार से कायम है। ये गुफाएँ औरङ्गाबाद से ५० मील की दूरी पर हैं। ३० सिम्बर १९३० के ट्रिब्यून में ''इंगलिशमैन'' से निम्न उद्धरण लिया गया है-

''अर्थात् अजन्ता की गुफाओं की कारीगरी तथा रङ्गसाजी अपूर्व है। निश्चित तौर पर नहीं कहा जा सकता कि ये गुफाएँ कब खोदी गईं, परन्तु बहुत खोज करने और मूर्तियों तथा दूसरे चिह्नों के देखने से पता लगता है कि इनका निर्माण बौद्धकाल में हुआ होगा। यह भी पता चलता है कि इनका निर्माण दो हजार वर्ष पूर्व हुआ होगा और इनके बनाने में लाखों आदमी लगे होंगे।''

"No ancient remains in India display such remarkable combination of sculpture painting as the Ajanta Caves."....
"When these caves were excavated is not definitely known but their ornaments, emblems and divinities are uniformally the token of a Buddhist origin..... This leads one to conclude that they must have been excavated more than two thousands years ago, at a time when India was the cradle of the arts and industries. Million of the people must have been employed on this." [३० सितम्बर, १९३० के ट्रिब्यून में ''इंगलिशमैन'' से उद्धृत]

विमान निर्माण की विधि

प्राचीन भारत में विमानों का भी प्रचार था तथा उन्हें नाना प्रकार के विमान बनाने का तरीका भी आता था। रामायणकालीन पुष्पक विमान के अतिरिक्त प्राचीन भारतीय साहित्य में बहुत स्थलों पर विमानों का वर्णन आता है।

लघुदारुमयं महाविहङ्ग दृढ़ैसुश्लिष्टतनु विधाय तस्य उदरे रसयन्त्रमादधीत ज्वलनाधारमधोऽस्यचाग्निपर्णम्।।
तत्रारूढः पुरुषस्तस्यपक्षद्वन्द्वोच्चालप्रोज्झितेनानलेन सुप्तस्यान्तः पारदस्य शक्त्या चित्रंकुर्वन्नम्बरे याति दूरम्।।

अर्थात् हल्की लकड़ी का बड़ा-सा पक्षी बनाकर और उसके शरीर के जोड़ों को मजबूती से बन्द करके उसके पेट में पारे का यन्त्र लगा दें और उसके नीचे अग्नि का पात्र रखें। इस पक्षी पर बैठा हुआ मनुष्यपक्षी के परों के हिलने से तेज हुई आँच की गर्मी के द्वारा उड़ने वाले पारे की शक्ति से आकाश में दूर तक जा सकता है।

इत्थमेव सुरमन्दिर तुल्यं सञ्चलत्यलघु दारुविमानम्।
आदधीत विधिना चतुरोऽन्तस्तस्य पारदमृतान् दृढकुम्भान्।।
अयः कपालाहितमन्दवह्निप्रतप्त तत्कुम्भभुवा गुणेन।
व्याम्नो झगित्याभरणस्वमेति सन्तप्तगर्जद्रसराजशक्तया।।

समराङ्गणसूत्रधार, यन्त्रविधानाध्याय ३०। श्लो. ९७-९८

अर्थात् इसी प्रकार से लकड़ी का देवमन्दिर के आधार का बड़ा विमान भी आकाश में उड़ सकता है। चतुर रचयिता को चाहिये कि वह उसके भीतर पारे से भरे मजबूत घड़ों को नियमानुसार रख के नीचे लगाये गये लोहे के कुण्डों में आग से उनको धीरे-धीरे गर्म करें।

इस पर यह प्रश्न होता है कि पारा जल से १३.६ गुणा भारी है और उसके भाप बनने में जलीय वाष्प से अधिक ताप की आवश्यकता होती है। उस पर जल के स्थान में पारे का उपयोग ही क्यों किया। इसका उत्तर देते हैं कि

''तत्रहेतुरयं ज्ञेयो व्यक्ता नैते फलप्रदाः। कथितानि अत्र बीजानि''

अर्थात् इनकी विधि सर्वसाधारण के जान लेने से इनका महत्व कम हो जाता है।

''यन्त्राणां घटना नोक्ता गुप्त्यर्थं नाज्ञतावशात्''-

इनकी विधि इसलिये नहीं बतलाई, क्योंकि इसे गुप्त रखना चाहते हैं।

यन्त्रेण कल्पितो हस्ती नदद्गच्छन्-प्रतीयते।
शुकाद्याः पक्षिणः क्लृप्तास्तालस्यानुगमान्मुहुः।।
जनस्य विस्मयकृतो नृत्यन्ति च पठन्ति च।
पुत्रिका वा गजेन्द्रो वा तुरंगो मर्कटोऽपि वा।।
वर्चनैर्वर्तनैर्नृ त्यंस्तालेन हरते मनः।। ६२-६४

अर्थात् यन्त्र लगाकर बनाया गया हाथी चिंघाड़ता चलता मालूम होता है। तोते आदि पक्षी ताल पर नाच कर और बोलकर देखने वालों को हैरान कर देते हैं। पुतली, हाथी, घोड़े इत्यादि अपने अङ्गों का संचालन करके मन को हर लेते हैं।

दारुजमिभस्वरूपं यत्सलिलं पात्र स्थितं पिबति।
तन्माहात्म्यं निगदितमेतस्योच्छ्रायतुल्यस्य।।११५।।

अर्थात् लकड़ी का बना हाथी बर्तन का पानी पी सकता है। यहाँ उच्छ्राय यन्त्र से cyphon यन्त्र भी अभिप्रेत हो सकता है।

शेष भाग अगले अंक में....

गुरुकुल के लिये प्रवेश-सूचना

परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा संचालित महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान-अजमेर में वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के उपदेशक तैयार करने हेतु उपदेशक कक्षा में प्रवेश प्रारम्भ हैं।

प्रवेशार्थी की न्यूनतम आयु १४ वर्ष तथा कक्षा आठ या उससे अधिक उत्तीर्ण हो। आर्ष-पद्धति से व्याकरण, दर्शन तथा महर्षि निर्दिष्ट पाठ्यक्रम के अध्यापन की व्यवस्था है।

गुरुकुल में अध्यापन, भोजन एवं आवास की निःशुल्क व्यवस्था है।

प्रवेश के इच्छुक अभ्यर्थी सम्पर्क करें-

आचार्य, आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, पुष्कर रोड, अजमेर।

दूरभाष- ०१४५-२४६०१६४, ०१४५-२६२१२७०

व्याख्यानमाला

परोपकारिणी सभा के भूतपूर्व प्रधान डॉ. धर्मवीर जी की तृतीय पुण्यस्मृति पर व्याख्यानमाला का तीसरा व्याख्यान दिनांक ०६ अक्टूबर २०१९ को आयोजित किया जायेगा। व्याख्यान का विषय '**महर्षि दयानन्द के वेद भाष्य में वैज्ञानिकता**' होगा।

व्याख्यानकर्ता - डॉ. सुरेन्द्र कुमार, सम्पादक परोपकारी

योगेश्वर श्रीकृष्ण जी का दूरदर्शी स्वरूप

कन्हैयालाल आर्य

महाभारत युग में कालरूपी घोड़े के कुशल सवार, क्रान्तदर्शी एवं दूरदर्शी तथा प्रत्युत्पन्नमति योगीराज कृष्ण ही हुए, जो जीवन भर प्रतिकूल परिस्थितियों से जूझते रहे। श्रीकृष्ण जी ने होश संभालते ही इनसे जूझना प्रारम्भ किया। यथा-तथा थोड़ी-सी शक्ति संगृहीत करके सर्वप्रथम कंस का विनाश किया और अपने नाना के कष्ट दूर किये। कंस के मरने से मगधराज जरासन्ध के क्रोध की सीमा न रही क्योंकि कंस जरासन्ध का जामाता था। अत: जरासन्ध ने श्रीकृष्ण को मारने के लिए एक बड़ी सेना के साथ आक्रमण कर दिया। श्रीकृष्ण समझते थे कि जरासन्ध की इतनी विशाल सेना के साथ युद्ध करना सम्भव नहीं अत: वो मथुरा छोड़कर पर्वत प्रदेश में चले गये और थोड़ी सी सेना से गुरिल्ला युद्ध के द्वारा जरासन्ध की नाक में दम कर दिया। अन्त में निराश होकर जरासन्ध वापिस तो चला गया परन्तु श्रीकृष्ण को पराजित करने के लिए एक विदेशी राजा कालयवन को मथुरा पर आक्रमण करने के लिये उकसाया। परिस्थिति की गम्भीरता को देखते हुए श्रीकृष्ण यह नहीं चाहते थे कि विदेशी चंगुल में फँस जावें अत: उन्होंने मथुरा छोड़कर जाने का निश्चय कर लिया। श्रीकृष्ण का अनुमान था कि इस प्रकार जरासन्ध का क्रोध भी शान्त हो जायेगा और विदेशियों के पैर जमने की सम्भावना भी कम हो जायेगी।

महाभारत के अन्तिम दिनों में जब दुर्योधन के लगभग सभी भाई एवं योद्धा समाप्त हो चुके थे। दुर्योधन और भीम का गदा-युद्ध होता है। गदा-युद्ध में मर्यादा का उल्लंघन कर जब भीम ने दुर्योधन की जङ्घा तोड़ दी तो बलराम, जो भीम और दुर्योधन के गदा के शिक्षक गुरु थे, भीम के इस आचरण से क्रोध में आकर कहने लगे कि भीम ने दुर्योधन के साथ अन्याय किया है अत: मैं इसे समाप्त करूँगा। उसी समय दूरदर्शी एवं प्रत्युत्पन्नमति श्रीकृष्ण ने बीच में पड़कर कहा कि भीम, द्रोपदी के साथ दुर्योधन द्वारा किये गये अभद्र व्यवहार के कारण दुर्योधन की जङ्घा तोड़ने की प्रतिज्ञा कर चुके थे, अत: प्रतिज्ञापूर्ति के लिए उसका ऐसा करना आवश्यक था।

जब एक बार योद्धा कर्ण को जीवनलीला-समाप्ति से पूर्व भीष्म पितामह जी ने बुलाकर कहा, ''हे कर्ण! कुल की फूट को देखते हुए मैं तुझे सदा कठोर वचन कहता रहा हूँ। नहीं तो अस्त्र-शस्त्रों के चलाने में और चुस्ती में तुम अर्जुन और महात्मा श्रीकृष्ण से किसी प्रकार कम नही हो'' महात्मा भीष्म पितामह जी का श्रीकृष्ण जी को महात्मा कहकर सम्बोधित करना श्रीकृष्ण जी के उज्ज्वल एवं दूरदर्शी पक्ष को सिद्ध करता है।

एक बार जब श्रीकृष्ण जी योद्धा कर्ण को पाण्डवों के पक्ष में लाने के लिए निमन्त्रण देते हैं तो वह किस-किस प्रकार से कर्ण को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं, यह भी श्रीकृष्ण के दूरदर्शी स्वरूप को दर्शाता है। श्रीकृष्ण योद्धा कर्ण से कहते हैं- ''हे कर्ण! तुम सनातन वैदिक मान्यताओं से परिचित हो और सूक्ष्म धर्मशास्त्रों में तुम्हारी पैठ है। शास्त्रों की मर्यादा यह है कि कुमारावस्था में उत्पन्न हुई सन्तान उसकी मानी जाती है, जिसके साथ उस कन्या का विवाह होता है। सो इस प्रकार की उत्पत्ति के कारण तू धर्मानुसार महाराज पाण्डु का ही पुत्र है, अत: धर्मशास्त्र की मर्यादा के अनुसार तू इस ओर आ, यहाँ तू राजा होगा। तेरे भाई-बन्धु युधिष्ठिर आदि हैं और ननसाल में हम वृष्णि लोग हैं। हे तात! आज तू मेरे साथ वहाँ जावेगा तो पाण्डव लोग युधिष्ठिर से भी पूर्व कुन्ती से उत्पन्न हुए बड़े भ्राता के रूप में तुझे सम्मानित करेंगे। पांचों पाण्डव तेरे अनुज भ्राता होने के कारण तेरे चरण-स्पर्श करेंगे। द्रोपदी के पाँचों पुत्र तथा सुभद्रा का अपराजित पुत्र अभिमन्यु, ये सब भी तेरे चरण-स्पर्श करेंगे। साथ ही पाण्डव पक्ष में एकत्र हुए सब अन्धक, वृष्णि तेरे अनुयायी होंगे। मैं तेरा पृथिवी के स्वामी राजा के रूप में अभिषेक करूँगा। धर्मपुत्र युधिष्ठिर युवराज के रूप में श्वेत व्यजन (पंखा) हाथ में धारण करके तेरी सेवा में सदैव उपस्थित रहेगा। भीमसेन विशाल श्वेत छत्र तेरे ऊपर लेकर खड़ा रहेगा। सफेद घोड़ों वाले तेरे सुन्दर रथ को अर्जुन हाँकेगा। नकुल, सहदेव, अभिमन्यु, पाञ्चाल

आदि सब तेरे पीछे-पीछे चलेंगे। तू पाँचों पाण्डवों में नक्षत्रों में चन्द्रमा के समान सुशोभित होकर राज्य का शासन करके, कुन्ती को आनन्दित कर।'' इतना बड़ा प्रलोभन श्रीकृष्ण दानवीर कर्ण को देते हैं। यह और बात है कि कर्ण मित्रता के वशीभूत होकर अपने मित्र दुर्योधन से कृतघ्नता नहीं करना चाहते थे, परन्तु यदि योद्धा कर्ण श्रीकृष्ण की इन बातों से प्रभावित हो जाता तो महाभारत का इतिहास ही कुछ और होता। परन्तु इस कार्य में श्रीकृष्ण जी की दूरदर्शिता का भाव तो अवश्य दृष्टिगोचर होता है।

महाभारत के युद्ध में श्रीकृष्ण ने सोचा कि जब तक गुरु द्रोणाचार्य जीवित हैं तब तक पाण्डवों की विजय अनिश्चित है। तभी उन्होंने एक निर्णय लिया। अश्वत्थामा नाम के एक हाथी की मृत्यु पर धर्मराज युधिष्ठिर के मुख से कहलवा दिया, ''अश्वत्थामा हतोहत: नरो वा कुञ्जरो वा'' जबकि ''अश्वत्थामा हतोहत:'' ये शब्द तो युधिष्ठिर से उच्च स्वर में कहलवाये और ''नरो व कुञ्जरो वा'' शब्द कहते ही नगाड़े बजवाने प्रारम्भ करवा दिये ताकि गुरु द्रोणाचार्य केवल इतना ही सुन पायें कि 'अश्वत्थामा हतोहत:' और वे पुत्र के मोह में उसकी मृत्यु के पश्चात् जीवन के मोह को छोड़कर धनुष-बाण छोड़ देंगे। उसी समय अर्जुन से कह दिया, ''अर्जुन! यह उचित अवसर है, इसी समय ही गुरु द्रोणाचार्य को युद्ध-क्षेत्र से हटाया जा सकता है।'' और अर्जुन ने श्रीकृष्ण से आदेश पाकर गुरु द्राणाचार्य को वीरगति की ओर प्रेषित कर दिया। कुछ लोग श्रीकृष्ण की इस प्रक्रिया पर उँगलियाँ उठाते हैं, परन्तु उस काल में जब सभी मर्यादायें टूट रहीं थीं तब यदि श्रीकृष्ण ने युद्ध में पाण्डवों की विजय को निश्चित करने के लिए ऐसा कहकर कोई अपराध नहीं किया, काँटे को सुईं से ही निकाला जा सकता है, पुष्प से नहीं और कहते भी हैं कि युद्ध और प्रेम में कुछ भी अनुचित नहीं होता। आततायी की हत्या करने के लिए साम-दाम-दण्ड-भेद सभी व्यवस्थाओं को अपनाना पड़ता है। अत: मैं भी कृष्ण के इस कृत्य को अनुचित नहीं मानता। इससे यह उनकी युद्ध में विजय की दूरदर्शिता को प्रदर्शित करता है।

यद्यपि श्रीकृष्ण मथुरा छोड़कर द्वारका चले गये, परन्तु जरासन्ध को किस प्रकार पराजित किया जाये, यह विचार करते रहते थे। उन्हें एक ऐसा अवसर मिला जब उन्होंने इस कार्य को मूर्तरूप दिया। इन्द्रप्रस्थ में पाण्डवों का राज्य व्यवस्थित होने पर राजा युधिष्ठिर के मन में राजसूय यज्ञ का विचार आया। अपने मन्त्रिमण्डल से विचार-विमर्श करके युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से सम्मति लेनी आवश्यक समझी और उनसे पुन: इन्द्रप्रस्थ पधारने के लिए अपने सन्देशवाहक वहाँ भेजे। श्रीकृष्ण जी ने अनुरोध को स्वीकार किया। युधिष्ठिर ने सब बातें उनके सम्मुख रख दीं। श्रीकृष्ण ने उत्तर दिया, ''सुझाव तो अच्छा है किन्तु इस कार्य को सम्पन्न करने के लिए सर्वप्रथम जरासन्ध की शक्ति को समाप्त करना होगा। उन्होंने कहा, महाबली जरासन्ध के जीवित रहते तुम राजसूय यज्ञ करने में सफल नहीं हो सकोगे उसने सब राजाओं को जीतकर अपने कारागार में डाल रखा है। हे राजन्! यदि आप राजसूय यज्ञ करना चाहते हैं तो उन सब राजाओं को छुड़ाने के लिए जरासन्ध को मार्ग से हटाना होगा।'' युधिष्ठिर श्रीकृष्ण की बात सुनकर निराश हो गया और कहने लगा, ''मैं तो शान्ति को मुख्य मानता हूँ। शान्ति से ही मेरा कल्याण हो सकता है। आपकी बातों से लगता है कि मैं सम्राट् की पदवी प्राप्त नहीं कर सकता।''

श्रीकृष्ण ने भी सारी स्थिति पर प्रकाश डालकर कहा, ''जरासन्ध ने घोर अत्याचार करके राजाओं को बन्धन में डाल रखा है। जो कोई अपनी शक्ति से उन्हें छुड़ावेगा, उसे बहुत यश प्राप्त होगा।'' किन्तु युधिष्ठिर हिम्मत हार बैठे और संन्यास तक की बात करने लगे। श्रीकृष्ण जी ने कहा, ''आप चिन्ता न करें। हम अच्छी तरह गुप्तरूप से शत्रु के घर में घुसकर, शत्रु के शरीर पर आक्रमण करके अवश्य सफलता प्राप्त करेंगे। मैं नीति की चाल को समझता हूँ। यदि आपको मेरे ऊपर विश्वास है तो भीमसेन और अर्जुन मुझे धरोहर के रूप में सौंप दो। भीम में अतुल बल है और हम दोनों की रक्षा का दायित्व अर्जुन सम्भाल लेंगे। अपमान, लोभ और बाहुबल के अभिमान के कारण निश्चय ही जरासन्ध भीमसेन से मल्लयुद्ध करना चाहेगा और महाबाहु भीम अवश्य ही जरासन्ध को पछाड़ देगा।''

इस प्रकार निश्चय कर तीनों तेजस्वी स्नातकों का वेश बनाकर मगध देश पहुँच गये। जरासन्ध ने उन्हें सम्मानीय

समझकर खड़े होकर उनका स्वागत किया। स्वागत-वचन के समय भीम और अर्जुन मौन रहे। बुद्धिमान् श्रीकृष्ण बोले, ''हे राजन्! इस समय इन दोनों का मौनव्रत है। अर्धरात्रि के पश्चात् ये आपसे बात करेंगे।'' अर्धरात्रि व्यतीत होने के पश्चात् जरासन्ध उन ब्राह्मणों के पास आया। जरासन्ध का यह नियम लोक-प्रसिद्ध था कि ब्राह्मण स्नातकों से वह अर्धरात्रि में भी मिलने को तैयार रहता था। किन्तु इन स्नातकों को विचित्र वेश में देखकर जरासन्ध चकित हुआ। उसने कहा, ''आप लोग पुष्पमालायें पहने हुए हैं और आप लोगों की भुजाओं पर धनुष की डोरी के चिह्न बने हुए हैं। आप लोगों के चेहरे से क्षात्रतेज टपक रहा है। आप लोग ठीक-ठीक बताइये कि आप कौन हैं?'' श्रीकृष्ण जी ने कहा, ''निश्चय ही हम ब्राह्मण नहीं है। मैं कृष्ण हूँ और ये दोनों पाण्डव हैं। हम तुझे युद्ध के लिए चुनौती देते हैं। या तो सब राजाओं को छोड़ दो अथवा मरने के लिए उद्यत हो जाओ।'' जरासन्ध ने कहा, ''इन सब राजाओं को मैं जीतकर लाया हूँ। इन जीते हुए राजाओं को तुम्हारे कहने से कैसे छोड़ दूँ? मैं युद्ध के लिए उद्यत हूँ।'' यह कहने पर श्रीकृष्ण ने जरासन्ध से कहा, ''राजन्! हम तीनों में से किसके साथ युद्ध करना चाहते हो?'' जरासन्ध ने भीमसेन से युद्ध करना स्वीकार किया। भीमसेन श्रीकृष्ण जी की अनुमति लेकर प्रभु-स्मरण कर युद्ध के लिए आ गया। दोनों में भयंकर युद्ध हुआ। श्रीकृष्ण के संकेतों पर भीमसेन ने जरासन्ध को मृत्यु के घाट उतार दिया।

बन्दी राजा लोगों को बन्धमुक्त कर दिया गया और उनसे कहा गया कि महाराज युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ मे सहयोग करें। जरासन्ध के पुत्र सहदेव को मगध का राजा बनाकर श्रीकृष्ण ने एक तीर से कई शिकार कर लिये । इस लम्बे कथानक का तात्पर्य यह है कि श्रीकृष्ण ने अपनी दूरदर्शिता के कारण एक ओर राजा युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ को सफल करा दिया दूसरी ओर अपने पुराने शत्रु जरासन्ध को मृत्यु को पहुँचा दिया और उन सभी राजाओं को मुक्त करके अपनी सदाशयता का परिचय दिया। जरासन्ध के पुत्र का राजतिलक करके मगध के राज्य को सदा-सदा के लिए कृतज्ञ बना लिया। ऐसी सूझ-बूझ के साथ संसार में केवल दूरदर्शी व्यक्तित्व ही चला करते हैं।

अत: हमें भी आज श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर संकल्प लेना चाहिये कि हम भी श्रीकृष्ण के चित्र को पूजने के बजाय उनके चरित्र से शिक्षा लें। प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को सावधान होकर दूरदर्शिता से देश के गौरव और सम्मान की सुरक्षा के लिए तुच्छ स्वार्थों की आहुति देनी चाहिये और अच्छे संयमी और तपस्वी व्यक्तियों के हाथों में देश का भविष्य सौंपना चाहिये। यदि हम ऐसा कर सके तो हमारा श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का पर्व मनाना सार्थक होगा अन्यथा एक परम्परा के अतिरिक्त कुछ नहीं होगा। ईश्वर हमें शक्ति दे कि हम श्रीकृष्ण जी के बताये हुए मार्ग पर चलकर अपने जीवन को सार्थक कर सकें तभी हम यह उद्घोष कर सकेंगे।

इन्द्रं वर्धन्तो असुर, कृण्वन्तो विश्वमार्यम् अपघ्नन्तो अराव्ण:।

(ऋ. ९/६३/५)

४/४५, शिवाजी नगर, गुरुग्राम।

परोपकारिणी सभा द्वारा आयोजित आगामी कार्यक्रम

१. १५ से २२ सितम्बर, २०१९- **योग-साधना शिविर**

२. ०१, ०२, ०३ नवम्बर २०१९- **ऋषि मेला**

ऋषि उद्यान में होने वाले कार्यक्रमों के लिए

सम्पर्क सूत्र- ०९४६०४२११८३, ०१४५-२४६०१६४, ०१४५-२६२१२७०

अग्नि और जल संसार के सब व्यवहारों के कारण हैं, इस से गृहस्थजन विशेषकर अग्नि और जल के गुणों को जानें और गृहस्थ के सब काम सत्य व्यवहार से करें। - **महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.२४**

शङ्का समाधान - ५५

डॉ. वेदपाल

शङ्का- ''वैदिक धर्म का मुख्य सनातन सिद्धान्त यह है कि वेद-सृष्टि की उत्पत्ति से पूर्व निर्मित हुए,'' कृपया इस कथित मुख्य सनातन सिद्धान्त के शब्द-प्रमाण से अवगत कराने का अनुग्रह करें। **अमृतमुनि, वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर**

समाधान- यह लेख स्वर्गीय श्री यशपाल सिद्धान्तालङ्कार का है। इसे 'ऐतिहासिक कलम' शीर्षक के अन्तर्गत पुनः प्रकाशित किया गया है।

सृष्ट्युत्पत्ति से सम्बद्ध किसी भी विषय पर विचार करते समय कतिपय बिन्दु ध्यान में रखकर ही विचार करना चाहिए।

१. सृष्टि प्रवाह से अनादि है अर्थात् कोई भी सृष्टि चाहे वर्तमान हो अथवा इससे पूर्व वा आगे होने वाली, इनमें कोई भी न तो प्रथम है और न ही अन्तिम। अतः सृष्टि-प्रलय चक्र अनवरत चलता रहता है।

२. वेदोत्पत्ति/वेदाविर्भाव का प्रयोजन जीव-मात्र का कल्याण है- **'वेदश्च सर्वजीवकल्याणार्थमाविर्भूतः'** -महर्षि दयानन्द, ऋग्भाष्य।

३. विद्या/ज्ञान को धारण करने में मनुष्य ही समर्थ है। अतः वेद विद्या का प्रकाश/आविर्भाव मनुष्योत्पत्ति होने पर ही सम्भव है। मानवोत्पत्ति के अनन्तर अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा इन चार ऋषियों के हृदय में वेद का प्रकाश किया, वही ज्ञान पुस्तक रूप में उत्तरवर्तियों को उपलब्ध हुआ। ये चारों ऋषि केवल माध्यम मात्र हुये हैं। इस विषय में महर्षिकृत ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका का वेदोत्पत्ति प्रकरण द्रष्टव्य है।

४. यह ज्ञान/वेद अग्नि आदि ऋषियों को पुस्तक रूप में प्राप्त न होकर अन्तःकरण में ज्ञान रूप में प्राप्त हुआ है। इसे यों भी समझ सकते हैं कि प्रत्येक सर्गारम्भ में चार श्रेष्ठ आत्माओं (जिनकी प्रत्येक सर्ग में अग्नि आदि संज्ञा ही होती है।) के हृदय में जीव मात्र के कल्याणार्थ ईश्वर इस वेद-ज्ञान का प्रकाश करता है।

यहाँ यह स्मरणीय है कि यह ज्ञान पुस्तक रूप (कागज पर लिखे/छपे/अंकित अथवा उकेरी हुई अक्षराकृति के रूप) में तो नहीं होता, किन्तु यह **नियताक्षरपूर्वी** (जैसे- ''अग्निमीडे पुरोहितम्'' को 'पुरोहितम् अग्निमीडे' अथवा 'अग्निमीडे पुरोहितम्. ईडे' रूप में न होकर प्रतिसर्ग ''अग्निमीडे पुरोहितम्'' अक्षरों के इसी निर्धारित क्रम से) होता है। अग्नि आदि ऋषियों द्वारा अन्य अवर ऋषियों तथा ग्रहण धारण पटु मनुष्यों द्वारा श्रुत एवं धारित होकर कालान्तर में पुस्तक रूप में जन-सामान्य को दृष्टिगत होता है। पुस्तक आदि माध्यम बदलने सम्भव हैं, जिस प्रकार तकनीकी के विकास के इस युग में पुस्तक का स्थान सी.डी., पैनड्राइव आदि ने ग्रहण कर लिया है, किन्तु इसमें भी अक्षर विन्यास का विपर्यय/अदला-बदली सम्भव नहीं है।

५. महर्षि दयानन्द वेद नित्यत्व के समर्थक हैं। एतदनुसार यह वेद-ज्ञान ईश्वरीय होने के कारण नित्य है। सर्गारम्भ में वेद का आविर्भाव तथा प्रलयकाल में तिरोभाव होता है, किन्तु उस (प्रलय) काल में भी यह नित्य ज्ञान ईश्वरीय होने के कारण ईश्वर में स्थित रहता है, तब पुस्तक आदि का तो अभाव होता है, (क्योंकि पुस्तक के पन्ने आदि कार्यावस्था हैं और प्रलय में सब पदार्थ कारणरूप में होते हैं। अतः पत्र, कागज, उससे निर्मित पुस्तक आदि कार्य पदार्थ नहीं रहते हैं। यही अवस्था सी.डी. तथा पैनड्राइव आदि की भी होगी।) किन्तु ज्ञान के नित्य तथा ईश्वरीय होने से उसका अभाव नहीं होता है, वह ईश्वर के ज्ञान में नित्य रहता है।

महर्षि के अनुसार पुस्तक आदि में व्यवहृत शब्द तो कार्यरूप होने से नष्ट होते हैं, किन्तु परमात्मा के ज्ञान में शब्दार्थ सम्बन्ध से युक्त शब्दराशि (वेद) नित्य हैं। अतः वे शब्द अर्थात् वेद-ज्ञान कभी नष्ट नहीं होता है।

६. ''वेद निर्मित हुए'' यहाँ निर्मित शब्द ही शङ्का का जनक है। निर्मित का सामान्य अर्थ निर्माण, सृजन है। इससे ध्वनित होता है कि पहले नहीं थे अथवा इस रूप में नहीं थे। साथ ही 'सृष्टि-उत्पत्ति से पूर्व निर्मित हुए' कथन से अनवस्था दोष भी आता है कि किस सृष्टि से पूर्व निर्मित हुए? यदि वर्तमान सृष्टि से तो क्या इससे पूर्व सृष्टि में नहीं थे? यदि थे तो क्या उससे पूर्व सृष्टि में हुए? इस प्रकार अनवस्था दोष आता है। इसका समाधान है कि सृष्टि प्रवाह से अनादि है और वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से नित्य है, उसके इस या किसी भी पूर्व सृष्टि में निर्मित होने का अवकाश नहीं। यह ज्ञान तो मानव के आविर्भूत होने पर श्रेष्ठ आत्माओं (अग्नि आदि देहधारी ऋषियों) के हृदय में ईश्वर द्वारा प्रदान किया जाता है। इसे वेद का आविर्भाव कहना उचित होगा।

आलोच्य लेख के लेखक प्रसिद्ध एवं सम्मान्य विद्वान् रहे

हैं। यह वाक्य किस प्रवाह में लिखा गया, कहना कठिन है। सृष्टि से पूर्व तो वेद ही क्या किसी वस्तु/पदार्थ का भी निर्माण सम्भव नहीं। निर्माण की प्रक्रिया ही तो सृष्टि है। ईश्वरीय ज्ञान में नित्य रहते हुए भी वेद का प्रकटीकरण/आविर्भाव/उत्पत्ति तो मनुष्योत्पत्ति के पश्चात् ही होती है। भले ही उसका काल कितना ही न्यून क्यों न हो।

दयानन्द के बेटे

रोहित आर्य

वेद-ज्ञान लेकर के दिल में, हम तूफान समेटे हैं,
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।।
हमने किया है काम राष्ट्र-जागरण का ही,
सारे जनमानस को हमने जगाया है।
ढोंग व पाखण्डवाली, बेल है उखाड़ डाली,
मुल्ले-मौलवियों का घमण्ड भी मिटाया है।
करके प्रहार सारी ही बुराइयों पै सुनो,
देश के सुधार का भी बिगुल बजाया है।
जिसे अपनाकर के ईश्वर को पा सकेंगे,
दुनियाँ को वेद-पथ हमने दिखाया है।। १।।
हमने उन्हें बचाया है जो, मझधारों में लेटे हैं।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।।
जाति-पाँति का मिटाया हमने सदा ही भेद,
बिछड़ों को हमने ही सीने से लगाया है।
हो गये विधर्मी हमारे जो थे हिन्दु भाई,
वापस ले आये उन्हें आर्य बनाया है।
बाल-ब्याह, सती-प्रथा बन्द करवाये और,
अधिकार नारियों को शिक्षा का दिलाया है।
ढोंग व आडम्बरों के जाल से निकाल कर,
यज्ञ करना-कराना हमने सिखाया है।। २।।
संस्कृति की रक्षा ख़ातिर, हम विष भी पी लेते हैं।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।।
राष्ट्र अस्मिता के लिए हम लड़ते रहे हैं,
पाने को स्वतन्त्रता को दिया निज खून है।
पढ़ करके सत्यार्थ पाया हमने प्रकाश,
फाँसी चढ़ने का आया जिससे जुनून है।
स्वामी दयानन्द जी से पाकर के प्रेरणा को,
सर्दी न देखी नहीं देखा मई-जून है।
बनकर बिस्मिल, शेखर, भगत सिंह,
नीच अंगरेज दिये गोलियों से भून हैं।। ३।।
भारत माता की खातिर हम, फाँसी पर चढ़ लेते हैं।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।।
माता भारती का मान वापस दिलाने हेतु,
आर्यसमाजियों ने योगदान दिया था।
गऊ-वध का विरोध हमने किया था और,
आगे बढ़ हमने ही बलिदान किया था।
हिन्दी-आन्दोलन में भी हम ही सदा लड़े थे,
तन-मन-धन का हमीं ने दान किया था।
हैदराबाद की रियासत मिलाने को भी,
आर्यों ने जाकर के सीना तान दिया था।। ४।।
लहू बहाकर देश की खातिर, त्याग स्वयं का देते हैं।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।।
गुरुकुल वाली शिक्षा फिर से चलाई और,
वेदों का किया प्रचार सारे ही जहान में।
संस्कृत भाषा फिर पढ़ व पढ़ाकर के,
दिया है बढ़ावा संस्कृति के सम्मान में।
शास्त्र और उपनिषदों को पढ़ने लगे हैं,
हमने लगाया चित्त ईश्वर के ध्यान में।
प्यारे देश भारत को एक करने के लिए,
हिन्दी का प्रसार किया सारे हिन्दुस्तान में।। ५।।
ऋषि-मुनियों की परिपाटी, हम दिल में आज समेटे हैं।
हमें गर्व कहने में है हम दयानन्द के बेटे हैं।।
आर्यो समूचा देश तुमको पुकारता है,
इस राष्ट्र को हमेशा तुम ही बचाओगे।
ऋषि दयानन्द के दिखाये रास्ते पै चल,
ढोंग व आडम्बरों से तुम ही बचाओगे।
पोप और मुल्लाओं के जाल से निकालकर,
मुक्ति-पथ दुनियाँ को तुम ही दिखाओगे।
''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' जब गूँजेगा तो,
सच्चे पूत ऋषि दयानन्द के कहाओगे।। ६।।
''रोहित'' तुम हो वो नाविक, जो देश की नैय्या खेते हैं।
हमें गर्व कहने में है हम, दयानन्द के बेटे हैं।।

मो. ८९५८६८२४८९

संस्था - समाचार

आनासागर के सुरम्य तट पर स्थित ऋषि उद्यान की पवित्र यज्ञशाला में प्रतिदिन प्रातः-सायं देवयज्ञ, वेद-पाठ, वेद-स्वाध्याय तत्पश्चात् वेद के मन्त्रों, ऋषि-कृत ग्रन्थों रामायण, महाभारत, गीता, दर्शनों, उपनिषदों के व्याख्यान के माध्यम से आचार्य घनश्याम जी, आचार्य श्यामलाल जी ने धर्मप्रेमी अतिथिगण व आश्रमवासी तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का मार्गदर्शन किया। प्रातः अपने प्रवचनक्रम में सभा के मन्त्री श्री कन्हैयालाल आर्य ने अपने व्याख्यान में बताया कि देवयज्ञ में जल से तीन आचमन का विधान क्यों है? इस प्रश्न का समाधान करते हुए उन्होंने बताया कि संसार में मात्र तीन सत्ता हैं- ईश्वर, जीव और प्रकृति। तीन से ही कार्यों में पूर्णता आती है। जैसे माता-पिता और पुत्र। कर्त्ता, कर्म और क्रिया आदि। साथ ही साथ जल की विशेषता बताते हुए मनुष्य को जल की तरह शीतल हो अपने को आहूत करना (जैसे जल को दूध में मिलाने पर वह अपने को दूध में मिला देता है।) ऐसे जब हमारे विचार होंगे तो मनुष्य कभी दुःखी नहीं होगा।

धर्मवीर- एक ऐसा व्यक्तित्व जिसकी आर्यसमाज के मूर्धन्य विद्वानों में गिनती होती हो, जो ऋषि के प्रति उनके कार्यों के प्रति पूरी निष्ठा से लगा था, जिसने सिद्धान्त के मार्ग को कभी छोड़ा नहीं, जिनके अन्दर नम्रता कूट-कूटकर भरी हो, सरल स्वभाव, ऐसा वक्ता जिसे सुनने को लोग सदा लालायित रहते थे, अपनी बात को ऐसे तार्किक ढंग से रखते थे कि लोग उनकी बातों को काट नहीं पाते थे, ऐसे महात्मा धर्मवीर के विषय में जितना गुणगान करें वह कम ही है। भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी, तदनुसार २ सितम्बर को उनका जन्मदिवस था। इस महापुरुष के जन्मदिवस के अवसर पर उनकी धर्मपत्नी श्रीमती ज्योत्स्ना 'धर्मवीर', एवं दो पुत्रियाँ एवं दामाद- श्रीमती सुवर्चा आर्य एवं श्री अंकुर भार्गव, श्रीमती निमिषा आर्य एवं श्री त्रिदीप राजभण्डारी, दौहित्र श्री अग्नीत राजभण्डारी, दिल्ली से पधारीं श्रीमती ऋचा भार्गव एवं श्री राकेश भार्गव, श्रीमती आभा गुंजल एवं श्री राजेन्द्र गुंजल मुख्य यजमान बने।

ऋषि उद्यान की पवित्र यज्ञशाला में यज्ञ के पश्चात् श्री प्रभाकर जी ने डॉ. धर्मवीर जी से जुड़ी बहुत सारी बातें बताईं। उन्होंने बताया कि धर्मवीर जी गृहस्थी होते हुए भी साधु थे, धन के प्रति अत्यन्त ईमानदार थे। परोपकारिणी सभा के प्रति उनका केवल लगाव नहीं था, सभा व महर्षि दयानन्द के प्रति अत्यन्त श्रद्धा थी। वह सभा को ही अपना सर्वस्व समझते थे। संस्कृत के प्रति उनका इतना लगाव कि उन्होंने अपनी पुत्रियों से बाल्यकाल से ही उनसे केवल संस्कृत में वार्तालाप किया।

एक बार की घटना है, वर्षा का मौसम था, वर्षा बहुत तेज हुई तो उनके घर में जगह-जगह से पानी टपक रहा था, उसी समय में खबर मिली कि सभा में पानी आ गया है वह तुरन्त घर से सभा के लिये चल दिये, उनका मानना था कि घर अपना है, हम कैसे भी रह लेंगे, पर सभा ऋषि दयानन्द की है। ऋषि पूरे विश्व को आर्य बनाना चाहते थे (**कृणवन्तो विश्वम् आर्यम्**) उनके कार्यों में कोई विघ्न न होना चाहिये। वे कहा करते थे-मंच, माइक, फोटो, नाम व अखबार जिसे प्रिय हैं, वह व्यक्ति समाज की सेवा कभी भी नहीं कर सकता है।

डॉ. धर्मवीर जी के जन्मदिवस के ही दिन गुरुकुल ऋषि उद्यान के द्वारा अष्टाध्यायी अन्त्याक्षरी भी आयोजित की गई जिसमें गुरुकुल ऋषि उद्यान के तीन विद्यार्थियों ने भाग लिया। धर्मवीर जी को अष्टध्यायी से बहुत लगाव था। वह अपने साथ हमेशा अष्टाध्यायी पुस्तक रखा करते थे और उसके सूत्रों का पाठ किया करते थे। इसलिए उसी दिन यह कार्यक्रम रखा गया। अन्त्याक्षरी में शामिल थे ब्र. प्रताप जी, ब्र. गौतम जी और ब्र. पवनदेव जी। इन तीनों ही विद्यार्थियों को पूरी अष्टाध्यायी के सूत्र कण्ठस्थ हैं। इनके पुरुषार्थ को देखकर डॉ. धर्मवीर जी की सुपुत्री श्रीमती सुवर्चा आर्य, माता ज्योत्स्ना जी एवं उनकी बहन श्रीमती ऋचा भार्गव और सभा-सदस्य डॉ. वेदप्रकाश 'विद्यार्थी' जी ने ब्रह्मचारियों को पुरस्कार देकर उत्साहवर्धन किया। अन्त में डॉ. वेदप्रकाश 'विद्यार्थी' जी ने विद्यार्थियों को आशीर्वाद प्रदान कर कार्यक्रम का समापन किया।

-ब्र. नीलेश आर्य- गुरुकुल ऋषि-उद्यान, अजमेर।

संस्था की ओर से....

क्या आप प्रतिदिन अतिथि यज्ञ नहीं कर पाते?
तो आइये, अतिथि यज्ञ के होता बनिये

वैदिक नित्यकर्मों में अतिथि यज्ञ प्रतिदिन करना अनिवार्य है, किन्तु आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं, फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय? इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाखे जलाकर व्यय करते हैं, असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी-छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युक्त पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें, इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन प्रतिवर्ष ५ हजार एक सौ रु. की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशित भी किये जाते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थित होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्षगांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि लगभग पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उन्हें उनके जन्मदिवस आदि पर परोपकारिणी सभा की ओर से दूरभाष द्वारा आशीर्वाद प्रदान किया जायेगा। यदि उस शुभ अवसर पर वे स्वयं उपस्थित होकर यजमान बनें तो यह सर्वोत्तम होगा।

अतिथि-यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि-यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगाँठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय **जन्मतिथि/वैवाहिक वर्षगाँठ आदि व दूरभाष संख्या** सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नकद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

परोपकारिणी सभा की गतिविधियाँ

परोपकारिणी सभा महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित उनकी उत्तराधिकारिणी सभा है और केवल नाम से ही नहीं, बल्कि अपने कार्यों से भी वह ऋषि के उत्तराधिकार के दायित्व को पूर्णतया निभा रही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती

ने इस सभा की स्थापना के समय तीन उद्देश्य रखे थे।

१. वेदादि सत्यशास्त्रों का प्रकाशन २. विद्वान् उपदेशक तैयार करके देश-विदेश में वैदिक धर्म का प्रचार एवं ३. आर्यावर्त्तीय दीन-दरिद्रों की सेवा।

इन सभी कार्यों को सभा अपने विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से पूरा करने में सर्वसामर्थ्य से लगी हुई है। यद्यपि सभा के पास आर्थिक आय का कोई स्थाई माध्यम नहीं है, पुनरपि ऋषिभक्तों एवं आर्यजनों के सहयोग और विश्वास पर ही सभा ने बड़े-बड़े कार्यों को प्रारम्भ किया और निरन्तर कर भी रही है। आचार्य डॉ. धर्मवीर जी, जो कि वर्तमान में परोपकारिणी सभा के प्रधान एवं मूल स्तम्भ थे, उनका कहना था कि **''कार्य यदि अच्छा है तो उसे प्रारम्भ कर देना चाहिये, सहयोग तो स्वयं ही मिल जाता है।''** यही शैली अपनाकर आज भी वैदिक विचार के प्रचार का कार्य निरन्तर जारी है। डॉ. धर्मवीर जी के जाने से सभा को बड़ा आघात अवश्य लगा है, परन्तु आर्यों का स्नेह, भरोसा उनके द्वारा प्रारम्भ किये गये कार्यों को रुकने नहीं देगा-ऐसा सभा को पूर्ण विश्वास है।

परोपकारिणी सभा आज अनेक कार्यों, माध्यमों से इस वेद प्रचार यज्ञ में लगी है, जिसकी सूची यहाँ दी जा रही है-

भव्य ऋषि उद्यान आश्रम, अतिथि यज्ञ, भोजनशाला, गौशाला, वानप्रस्थ एवं संन्यासाश्रम, गुरुकुल, परोपकारी पत्रिका, प्रकाशन, योग साधना एवं चरित्र निर्माण शिविर, सत्यार्थ प्रकाश व ऋषि जीवन चरित्र का नि:शुल्क वितरण, पाण्डुलिपियों का डिजिटलाइजेशन, पुस्तकालय, औषधालय, देश-देशान्तरों में वेद-प्रचार, आयुर्वेदिक औषधालय।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में वर्ष २०१२ से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

परोपकारिणी सभा में आयुर्वेदिक चिकित्सक की आवश्यकता

सभा द्वारा संचालित आयुर्वेदिक चिकित्सालय के लिये योग्य आयुर्वेदिक चिकित्सक की आवश्यकता है। चिकित्सालय में सेवा देने का समय प्रतिदिन २ घण्टे है। आवास, भोजन आदि की व्यवस्था सभी की ओर से ही होगी।

सम्पर्क- ०१४५-२६२१२७०, ९४६०४२११८३

परोपकारिणी सभा के प्रकल्पों में सहयोग करने हेतु

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA AJMER)

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आई**, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091 email : psabhaa@gmail.com

दानदाताओं की सूची

अतिथि यज्ञ के होता

(०१ से १५ सितम्बर २०१९ तक)

१. श्री बाबूलाल चौहान, अजमेर २. श्री सौजन्य गोयल, मुजफ्फरनगर ३. श्री महेश पटेल, मोरवी ४. श्री पारसनाथ, भूडोल, अजमेर ५. श्री वासुदेव आर्य व श्रीमती कुमुदिनी आर्य, अजमेर ६. श्रीमती सरला मेहता, अजमेर ७. श्री हरीश कुमार आर्य, अलीगढ़ ८. आर्यसमाज, अकोला ९. श्री सुनील कुमार आर्य, नई दिल्ली १०. श्री आदित्य संजीव मालेकर, बोधन ११. डॉ. वी. दयालु, पालम, दिल्ली १२. श्री अग्निवेश व श्रीमती कंचन आर्य, ऋषि उद्यान, अजमेर १३. श्री बी.एस. बत्रा, नई दिल्ली १४. कु. अनमोल धुल, रोहतक १५. श्री विश्वनाथ, कर्नाटक १६. श्री अनिल कुमार, भिवानी १७. श्री हितेश कुमार, महेन्द्रगढ़ १८. श्री रामचन्द्र आर्य, सीतापुर १९. श्री बलवान सिंह, नजफगढ़ २०. श्री मंगलसेन आर्य, मुजफ्फरनगर २१. श्री मल्लिकार्जुन, गुलबर्गा २२. श्री मान दाहिमा, किशनगढ़ २३. डॉ. रश्मिप्रभा शास्त्री, लखनऊ २४. श्री मनीष कुमार, रेवाड़ी २५. श्रीमती सोना देवी व श्री सुरेन्द्र सिंह यादव, ऋषि उद्यान, अजमेर २६. श्री मुमुक्षु मुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर २७. श्री जयभगवान आर्य, गुरुग्राम २८. श्री तेजपाल, देहरादून २९. श्री विकास आर्य, सोनीपत ३०. श्रीमत इन्दु सुराणा, अजमेर ३१. श्री संदीप आर्य, बहादुरगढ़ ३२. श्री राधाकृष्ण, पंचकुला ३३. श्रीमती बिन्दु उपाध्याय, अजमेर ३४. डॉ. ज्योति वर्मा, गुलाबपुरा, भीलवाड़ा ३५. श्रीमती मन्जु शर्मा, जयपुर ३६. श्री नारायण सिंह आर्य, फरीदाबाद ३७. श्रीमती मिथलेश आर्य, ऋषिउद्यान, अजमेर ३८. श्री चतरसिंह नागर, नई दिल्ली ३९. श्री शंकरमुनि, बोधन ४०. श्री अमृतलाल तापड़िया, उदयपुर ४१. आर्यसमाज, जूनागढ़ ४२. आर्यसमाज, आनन्द ४३. श्री लक्ष्मण मुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर ४४. श्रीमती सन्तोष अरोड़ा, अजमेर ४५. श्रीमती अमिता ठाकुर, बीकानेर ४६. श्री सुभाष चन्द चांदना, नईदिल्ली ४७. श्री श्याम सुन्दर व श्रीमती कान्ता राठी, दिल्ली ४८. श्री माणकचन्द जैन, छोटी खाटु।

गोभक्तों से निवेदन

ऋषि-उद्यान में परमार्थ हेतु गोशाला संचालित है। गोशाला की गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में नि:शुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि-उद्यान में संचालित गोशाला के दानदाता

(०१ से १५ सितम्बर २०१९ तक)

१. श्री हरीशचन्द्र खण्डेलवाल, अजमेर २. श्री माणकचन्द जैन, छोटी खाटु ३. श्री हरसहाय सिंह गंगवार, (आर्य) बरेली ४. श्रीमती सुमित्रा, गुरुग्राम ५. श्री जगराम आर्य, महेन्द्रगढ़ ६. श्री संदीप सोनी, जोधपुर ७. श्री वासुदेव आर्य व श्रीमती कुमुदिनी आर्य, अजमेर ८. श्रीमती सन्तोष जायसवाल, अलवर ९. डॉ. वेदप्रकाश 'विद्यार्थी', अजमेर १०. श्री सौरभ सोनी, अजमेर ११. श्री अग्निवेश व श्रीमती कंचन आर्य, ऋषि उद्यान, अजमेर १२. श्री मुकेश साहू, ऋषि उद्यान, अजमेर १३. श्री विश्वास पारीक, अजमेर १४. श्री दिनेश शर्मा, अजमेर १५. श्रीमती पुष्पलता उपाध्याय, अजमेर १६. श्री श्योताज सिंह यादव, अलवर १७. सुश्री करुणा विजयवर्गीय, अजमेर १८. श्रीमती शकुन्तला यादव, बीकानेर १९. श्रीमती सन्तोष गुप्ता, मथुरा २०. श्री राजेन्द्र पाटीदार, इन्दौर २१. श्री बदनसिंह शर्मा, फरीदाबाद २२. मा. कपूरसिंह आर्य, जीन्द २३. श्री सत्यप्रकाश आर्य, मेरठ २४. श्रीमती सन्तो देवी, मेरठ २५. आर्यसमाज बहादुरपुर, मुजफ्फनगर २६. श्री कमल मल्लिकार्जुन नारायणकर, गुलबर्गा २७. श्री मुमुक्षु मुनि, ऋषि उद्यान, अजमेर २८. श्रीमती कौशल्या देवी, अलवर २९. श्रीमती निर्मला देवी, अजमेर ३०. श्री पंकज, अजमेर ३१. श्री हर्षवर्धन राठौड़, अजमेर ३२. श्री महेन्द्र, अजमेर ३३. श्री ऋषु बत्रा, चण्डीगढ़ ३४. श्रीमती मिथलेश आर्य, ऋषि उद्यान, अजमेर ३५. श्री सुरेन्द्र सिंह यादव, ऋषि उद्यान, अजमेर ३६. स्वामी आशुतोष, ऋषि उद्यान, अजमेर ३७. श्री महेश नवाल, अजमेर ३८. श्री अमृतलाल धनजी भाई, राजकोट ३९. श्रीमती भँवरीदेवी, राजगढ़ ४०. श्रीमती मधुसुदन चन्दौरा, अटलाण्टा, अमेरिका ४१. श्रीमती सन्तोष अरोड़ा, अजमेर ४२. श्री नरेन्द्र नाथ मिश्रा, अजमेर ४३. डॉ. अन्जु मल्होत्रा, नई दिल्ली ४४. श्री सुरेशचन्द गुप्ता, नई दिल्ली ४५. श्री सी.एल. भण्डारी, ठाणे।

परोपकारिणी सभा, अजमेर के तत्त्वावधान में
१३६ वाँ ऋषि बलिदान समारोह
दिनांक १, २, ३ नवम्बर २०१९, शुक्र, शनि, रविवार

विराट् व्यक्तित्त्व महर्षि दयानन्द की समग्र मानव जाति ऋणी है। इस ऋण को चुकाने का स्वर्ण-अवसर ऋषि के १३६वें बलिदान वर्ष के उपलक्ष्य में हमको प्राप्त हुआ है। इस अवसर पर परोपकारिणी सभा भव्य समारोह का आयोजन करने जा रही है।

यजुर्वेद पारायण यज्ञ- 'यजुर्वेद पारायण यज्ञ' की पूर्णाहुति बलिदान समारोह के अन्तिम दिन ३ नवम्बर को प्रातः १० बजे होगी। यज्ञ के ब्रह्मा आर्यजगत् के प्रतिष्ठित विद्वान् डॉ. विनय विद्यालंकार-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड होंगे।

वेदगोष्ठी - प्रतिवर्ष की परम्परा के अनुसार इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ दिल्ली एवं अनुसन्धान केन्द्र परोपकारिणी सभा के संयुक्त प्रयास से वेदगोष्ठी का आयोजन किया जायेगा। इस गोष्ठी में देश के विविध विद्वान् अपने शोधपूर्ण मौलिक विचार प्रस्तुत करेंगे। इस वर्ष वेदगोष्ठी का विचारणीय बिन्दु है- **वेद वर्णित ईश्वर-स्वरूप एवं नाम (ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव)।** जो विद्वान् गोष्ठी में शोधपत्र प्रेषित करना चाहते हैं, वे १० अक्टूबर तक सभा के पते पर प्रेषित करवा देवें। १, २, ३ नवम्बर को ऋषि बलिदान समारोह के कार्यक्रमों के साथ-साथ वेदगोष्ठी भी चलती रहेगी। ऋषि-भक्त इसे सुनने का लाभ उठा सकते हैं।

चतुर्वेद कण्ठस्थीकरण प्रतियोगिता- प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली इस प्रतियोगिता में २१ वर्ष तक के छात्र भाग ले सकते हैं। किसी भी वेद को आद्योपान्त स्मरण करके इस प्रतियोगिता में भाग लिया जा सकता है। जो छात्र जिस वेद पर गत वर्षों में पारितोषिक ग्रहण कर चुके हैं, वे उस वेद से अतिरिक्त वेद स्मरण करके भाग ले सकते हैं। २ नवम्बर को परीक्षा एवं ३ नवम्बर को पुरस्कार-वितरण का कार्यक्रम होगा। जो छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेना चाहते हैं, वे अपने-अपने गुरुकुलों, आश्रमों, संस्थानों से आचार्य द्वारा अधिकृत पत्रक पर २-छायाचित्र सहित अपना परिचय १० अक्टूबर, २०१९ तक आचार्य महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल, ऋषि उद्यान, अजमेर के पते पर भेज दें।

सम्मान - प्रतिवर्ष विशिष्ट वैदिक विद्वान्, विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को इस समारोह में सम्मानित किया जाता है। इस वर्ष भी सम्मान -समारोह होगा। जिसमें अनेक विद्वान्-विदुषियों एवं कार्यकर्त्ताओं को सम्मानित किया जायेगा।

नवम्बर के आरम्भ में अजमेर में हल्की ठंड होने लगती हैं, ऋषि उद्यान खुले में होने से सर्दी का प्रभाव कुछ अधिक रहेगा। रात्रि में कम्बल ओढ़ने जैसी ठण्ड रहेगी। जो समूह में रहना चाहते हैं उनकी निवास व्यवस्था ऋषि उद्यान में होगी और जो अपने निवास की व्यवस्था होटल-धर्मशाला में करवाना चाहते हैं, कृपया वे सभा कार्यालय से पूर्व सम्पर्क कर अग्रिम राशि जमा करवा कर कमरा आरक्षित करवा लें। सभी से विशेष निवेदन है कि अपने आने की सूचना कम से कम एक सप्ताह पूर्व दे देवें, जिससे संख्या का अनुमान होकर तदनुसार व्यवस्था की जा सके। सभी से निवेदन है कि १३६वें बलिदान समारोह में अपने परिवार व समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं सहित पधार कर महर्षि को हार्दिक श्रद्धांजलि प्रदान करें, महर्षि दयानन्द के स्वप्न को साकार करने हेतु प्रेरणा उत्साह प्राप्त कर प्रचार-प्रसार को एक नई चेतना प्रदान करें।

ऋषि मेले में आमन्त्रित विद्वान् एवं विशिष्ट अतिथि- आचार्य देवव्रत-महामहिम राज्यपाल गुजरात, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती-गुरुकुल गौतम नगर, देहली, स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती-मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, उ.प्र., श्री धर्मपाल आर्य-प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, श्री विनय आर्य-मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली, प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु-अबोहर, श्री सुरेश अग्रवाल-प्रधान सार्वदेशिक सभा, प्रो. सुरेन्द्र कुमार-पूर्व कुलपति, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार, श्री तपेन्द्र वेदालंकार-(रि. आई.ए.एस.) जयपुर, आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश, आचार्य विरजानन्द दैवकरणि-झज्जर, श्री दीनदयाल गुप्त-कोलकाता, श्री शत्रुघ्न आर्य-राँची, श्री सत्यानन्द आर्य-दिल्ली, डॉ. राजेन्द्र विद्यालंकार-कुरुक्षेत्र, प्रो. महावीर अग्रवाल-पूर्व कुलपति, उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, प्रो. कमलेश चौकसी-अहमदाबाद, डॉ. रामप्रकाश वर्णी-एटा, श्री जगदीश शर्मा-जयपुर, श्री शिवकुमार चौधरी-इन्दौर, श्री जयदेव आर्य-राजकोट, श्री ठा. विक्रमसिंह-दिल्ली, आचार्य विजयपाल-झज्जर, श्री सज्जनसिंह कोठारी-पूर्व लोकायुक्त जयपुर, श्री विजयसिंह भाटी-जोधपुर, श्री इन्द्रजित् देव-यमुनानगर, आचार्य विद्यादेव, श्री पुनीत शास्त्री-मेरठ, आचार्य घनश्यामसिंह, आचार्य श्यामलाल, डॉ. रघुवीर वेदालंकार-दिल्ली, स्वामी ऋतस्पति-होशंगाबाद, आचार्या सूर्या देवी-शिवगंज, आचार्य ओम्प्रकाश-आबूपर्वत, मा. रामपाल आर्य-प्रधान आ.प्र.स. हरियाणा, डॉ. महावीर मीमांसक-दिल्ली, श्री विजय शर्मा- भीलवाड़ा, डॉ. जगदेव-रोहतक, पं. रामनिवास गुणग्राहक-श्रीगंगानगर, श्री राजवीर आर्य, डॉ. मुमुक्षु आर्य-नोएडा, पं. सत्यपाल पथिक, पं. भूपेन्द्र सिंह, डॉ. उषा शर्मा 'उवस' आदि।

इस समारोह हेतु आपका आर्थिक सहयोग आयकर की धारा '८०-जी' के अन्तर्गत दिए गये प्रावधान के अनुरूप कर मुक्त होगा। विदेश में निवास कर रहे धर्मप्रेमी सज्जन स्वदेश में होने वाले इस समारोह हेतु मुक्त हस्त से दान देकर देश का गौरव बढ़ाएँ। सभा को भारतीय शासन द्वारा विदेशों से दानस्वरूप दी गई राशि को प्राप्त करने की छूट प्राप्त है। आपका सहयोग ही हमारा सम्बल है। शुभकामनाओं सहित।

डॉ. वेदपाल — **कन्हैयालाल आर्य**
प्रधान — **मन्त्री**

ओ३म्

परोपकारिणी सभा

दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर (राज.) पिन. ३०५००१ दूरभाष– ०१४५–२४६०१६४

वेदगोष्ठी–२०१९

विषय– वेद वर्णित ईश्वर–स्वरूप एवं नाम (ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव)

मान्यवर सादर नमस्ते।

आशा करता हूँ कि आप स्वस्थ सानन्द होंगे। आपको सुविदित है कि सद्भावी विद्वानों के सहयोग से सदा की भांति इस वर्ष भी अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ, दिल्ली तथा अनुसंधान विभाग परोपकारिणी सभा, अजमेर के संयुक्त तत्त्वावधान में ऋषि मेले के अवसर पर वेदगोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है। इस गोष्ठी में देश के अनेक भागों से पधारे प्रख्यात वैदिक विद्वान् निर्धारित विषयों पर अपने शोधपूर्ण विचार प्रस्तुत करते हैं। इनमें से चुने हुए शोध–पत्र परोपकारी व वेदपीठ की शोध–पत्रिका के माध्यम से प्रकाशित किये जाते हैं। जिससे जो लोग गोष्ठी में नहीं आ सकते वे भी लाभान्वित होते हैं। विद्वानों को भी इस विषय पर अधिक विचार करने का अवसर मिलता है। गत ३१ वर्षों से गोष्ठी का आयोजन निरन्तर किया जा रहा है। अब तक निम्नलिखित बिन्दुओं पर विचार किया जा चुका हैः–

१. ऋषि दयानन्द की वेदभाष्य शैली।	**१२ नवम्बर, १९८८**
२. वेद और कर्मकाण्डीय विनियोग।	**०५ नवम्बर, १९८९**
३. अथर्ववेद समस्या और समाधान।	**२७ नवम्बर, १९९०**
४. वेद और विदेशी विद्वान्।	**१६ नवम्बर, १९९१**
५. वैदिक आख्यानों का वास्तविक स्वरूप।	**०१ नवम्बर, १९९२**
६. वेदों के दार्शनिक विचार।	**२८ नवम्बर, १९९३**
७. सोम का वैदिक स्वरूप।	**१२ नवम्बर, १९९४**
८. पर्यावरण समस्या का वैदिक समाधान।	**०३ नवम्बर, १९९५**
९. वैदिक समाज व्यवस्था।	**०१ नवम्बर, १९९६**
१०. वेद और राष्ट्र।	**२४ अक्टूबर, १९९७**
११. वेद और विज्ञान।	**०९ अक्टूबर, १९९८**
१२. वेद और ज्योतिष।	**१० नवम्बर, १९९९**
१३. वेद और पदार्थ विज्ञान	**०३ नवम्बर, २०००**
१४. वेद और निरुक्त	**१८ नवम्बर २००१**
१५. वेद में इतिहास नहीं	**०१ नवम्बर २००२**
१६. वेद में कृषि व वनस्पति विज्ञान	**३१ अक्टूबर २००३**
१७. वेद में शिल्प	**१९ नवम्बर २००४**
१८. वेदों में अध्यात्म	**११ नवम्बर, २००५**
१९. वेदों में राजनीतिक चिन्तन	**२७ नवम्बर, २००६**
२०. वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है	**१६ नवम्बर, २००७**
२१. वैदिक समाज विज्ञान	**०५ नवम्बर, २००८**
२२. सत्यार्थप्रकाश का ७ वाँ समुल्लास व वेद	**२३ अक्टूबर, २००९**
२३. सत्यार्थप्रकाश का ८ वाँ समुल्लास व वेद	**१२ नवम्बर, २०१०**
२४. सत्यार्थप्रकाश का ९ वाँ समुल्लास व वेद	**०४ नवम्बर, २०११**
२५. महर्षिदयानन्दाभिमत मन्तव्यः वैदिक परिप्रेक्ष्य	**१६ नवम्बर, २०१२**
२६. वेद और सत्यार्थप्रकाश का १२वाँ समुल्लास	**८ नवम्बर, २०१३**
२७. भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद	**३१ अक्टू. १,२ नव., २०१४**
२८. भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद	**२०,२१,२२ नव., २०१५**
२९. दयानन्द दर्शन की वेदमूलकता	**४,५,६ नव., २०१६**
३०. वेदों में शिक्षा के सिद्धान्त	**२७,२८,२९ अक्टू., २०१७**
३१. षड्दर्शनों की वेदमूलकता और महर्षि दयानन्द	**१६,१७,१८ नवम्बर., २०१८**

वेदगोष्ठी के विषय-२०१९

०१. ईश्वर के मुख्य निज नाम 'ओ३म्' तथा अन्य गौण नामों का वैशिष्ट्य और महत्त्व।
०२. महाव्याहृतियों (भूः, भुवः, स्वः) के आलोक में ईश्वर के स्वरूप की विवेचना।
०३. ईश्वर के सच्चिदानन्दस्वरूप की विवेचना।
०४. ईश्वर की 'सर्वशक्तिमत्ता' की विवेचना।
०५. ईश्वर के गुणों (निराकारत्व, दयालुता, न्यायकारित्व इत्यादि) का विवेचन।
०६. ईश्वर का कर्तृत्व-विवेचन।
०७. वेदों का उत्पत्तिकर्त्ता परमेश्वर (शास्त्रयोनित्वात्)
०८. ज्ञान-विज्ञान का जनानेहारा आद्यगुरु परमेश्वर (स एष पूर्वेषामपि गुरु...)
०९. ईश्वर की सगुण-निर्गुणता का स्वरूप।
१०. प्रकृति व जीव से परमात्मा से पार्थ क्या।
११. भूत-भविष्य-वर्तमान का ज्ञाता परमेश्वर।
१२. ईश्वर की प्रतिमा, साकारत्व, अवतार इत्यादि की निषधक श्रुतिभेद की विवेचना।
१३. 'पुरुषसूक्त' में ईश्वर का स्वरूप।
१४. 'ईश्वरसिद्धि' की विवेचना।
१५. ईश्वर की महिमा, कर्म और स्वभाग।
१६. ईश्वर-प्राप्ति अर्थात् वेदोक्त ईश्वरोपासना।
१७. ईश्वर-प्राप्ति के उपाय/मार्ग-ज्ञान, कर्म, उपासना इत्यादि की विवेचना।

महत्त्वपूर्ण सूचना

योग-साधना एवं स्वाध्याय शिविर की तिथियों में परिवर्तन किया गया है। अब यह शिविर १५ से २२ सितम्बर २०१९ को आयोजित होगा।

ऋषि मेला २०१९ हेतु स्टॉल आवंटन

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष ऋषि मेला १, २, ३ नवम्बर शुक्र, शनि, रविवार २०१९ को ऋषि उद्यान में आयोजित होगा। उसमें आर्य जगत् का साहित्य, हवन सामग्री, अन्यान्य सामग्री की स्टॉल लगती हैं। प्रति स्टॉल किराया १००० रु. निर्धारित है। जिसकी राशि पहले जमा होगी उसी क्रम से स्टॉल का आवंटन होगा। जिन महानुभावों को जितनी स्टॉल की आवश्यकता है, उसी अनुरूप राशि बैंक ड्राफ्ट द्वारा या नकद जमा करावें।

स्टॉल सुविधाः- कारपेट, दो टेबल, दो कुर्सी, २ ट्यूब लाइट प्रति स्टॉल। **स्टॉल साइज**- ७.५×१५ फीट।

ध्यातव्य- **१.** स्टॉल में रखी टेबल, कुर्सी आदि पूर्व निर्धारित सामग्री को इधर-उधर या अन्य स्टॉल में न बदलें। **२.** अतिरिक्त सामग्री की आवश्यकता हो तो टैन्ट हाउस के कर्मचारी से सम्पर्क कर प्राप्त करें तथा निर्धारित राशि तुरन्त भुगतान करें। **३.** बिस्तर, रजाई, चादर, तकिया को टेन्ट हाउस कर्मचारी से प्राप्त कर निर्धारित राशि जमा करा दें। **४.** स्टॉल व्यवस्थापक से स्टॉल संख्या, राशि की रसीद दिखाकर प्राप्त करें। बिना पूर्व अनुमति के स्टॉल में सामान न रखें, न अधिकृत करें। **५.** आपके सक्रिय सहयोग व अनुशासन की अपेक्षा है। अनियमितता को स्थान न देवें। ६. अपना मोबाइल (चलभाष) नवम्बर देना अति आवश्यक है। ७. आप अपना स्थाई पता अवश्य देवें। ८. स्टॉल में आप पुस्तकें/दवाइयाँ/अन्य सामग्री का उल्लेख अवश्य करें। ९. स्टॉल आवंटन हेतु अग्रिम राशि जमा करावें, अन्यथा विचार सम्भव नहीं होगा। १०. एक पासपोर्ट फोटो भिजवावें, जो परिचय पत्र के साथ अंकित हो। उसमें स्टॉल आवंटन संख्या भी अंकित किया जाएगा। ११. स्टॉल आवंटन की सूचना निर्धारित अवधि में दी जायेगी। **नोटः**- किसी प्रकार का अवैदिक साहित्य एवं सामग्री न हो अन्यथा उचित कार्यवाही सम्भव होगी।

'सत्यार्थ प्रकाश' प्रचार महायज्ञ में आपकी आहुति

महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश' आर्यों का ब्रह्मास्त्र है। ऐसा ब्रह्मास्त्र, जिसने अविवेक, पाखण्ड, अन्धविश्वासों का दमन कर समाज में एक नई क्रान्ति 'वैचारिक क्रान्ति' को जन्म दिया। अन्धश्रद्धा, अविवेक और पाखण्ड मानव समाज में सहज ही पनपने वाली समस्या है, इसलिये प्रत्येक काल, प्रत्येक स्थान और प्रत्येक परिस्थिति में इन समस्याओं के उन्मूलन की आवश्यकता है-अत: 'सत्यार्थ प्रकाश' की आवश्यकता भी सदैव ही अनिवार्य रहेगी, परन्तु यह विचार जन-जन तक पहुँचे, तो ही लाभकारी होगा। इसी को ध्यान में रखते हुए परोपकारिणी सभा ने ६ वर्ष पूर्व 'विश्व पुस्तक मेला' दिल्ली में प्रतिवर्ष 'सत्यार्थप्रकाश' के साथ 'महर्षि का जीवन-चरित्र' एवं 'आर्याभिविनय' पुस्तक का नि:शुल्क वितरण करने की योजना बनाई, जो निरन्तर चल रही है। इस कार्य के परिणाम भी बहुत सुखद रूप में सामने आये हैं। पुस्तक में कई व्यक्ति आकर कहते हैं कि हमारे पास यह पुस्तक है, हम पिछले वर्ष ले गये थे।

प्रत्येक आर्यमात्र की यह इच्छा होगी कि वह भी इस ग्रन्थ को वितरित कर पुण्य का भागी बने। इसके लिये सभा प्रत्येक आर्य को इस महायज्ञ में सम्मिलित करना चाहती है। प्रत्येक व्यक्ति यज्ञ में अपनी आहुति दे तो यज्ञ और अधिक भव्य एवं विस्तृत हो जाता है। 'सत्यार्थप्रकाश' के नि:शुल्क वितरण रूपी यज्ञ में अपनी आहुति देने के लिये आप अपने सामर्थ्यानुसार सहयोग दे सकते हैं। परोपकारिणी सभा की ओर से प्रकाशित सत्यार्थप्रकाश बड़े अक्षरों में, बढ़िया कागज पर, सजिल्द छापी जाती है, जिससे नये व्यक्ति के लिये भी पुस्तक संग्रहणीय बन जाती है। इस पुस्तक की छपाई में एक प्रति का खर्च लगभग १०० रु. आता है। **यदि कोई व्यक्ति अपनी सात्त्विक भावना से केवल २० पुस्तकें (इससे अधिक कितनी भी) ही वितरित करवाना चाहता है, तो सभा उतनी प्रतियों पर दानी व्यक्ति का नाम छपवाकर वितरित करेगी। इसी प्रकार ३०, ५०, १०० आदि।**

१०० रु. प्रति के अनुसार आप दान देकर अपनी ओर से, अपने नाम से पुस्तक वितरित करा सकते हैं। आहुतियाँ जितनी अधिक होंगी, यज्ञ का फल भी उतना ही अधिक होगा।

अपने दान के साथ 'सत्यार्थप्रकाश वितरण' अवश्य लिख देवें, और साथ ही अपना नाम एवं पता भी। यह दान आप परोपकारिणी सभा के खाते में ऑनलाइन, चैक द्वारा या फिर परोपकारिणी सभा के पते पर मनिऑर्डर भी कर सकते हैं। यह यज्ञ आपका है, प्रत्येक आर्य का है। अत: प्रत्येक आर्य इसमें अपनी आहुति अवश्य दे।

न्यूनतम	२० प्रतियाँ	२१००/- रु.
	३० प्रतियाँ	३१००/- रु.
	५० प्रतियाँ	५१००/- रु.
	१०० प्रतियाँ	११०००/- रु.

इस प्रकार जितनी अधिक प्रतियाँ बाँटना चाहें, उतनी और दूरभाष संख्या के साथ भेज देवें। दान अक्टूबर माह के अन्त तक भिजवा देवें, ताकि प्रतियों की संख्या निर्धारित करके उन पर दानदाताओं का नाम अंकित किया जा सके। धन्यवाद।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

लेखकों से निवेदन

- लेखक कृपया अपने मौलिक व अप्रकाशित लेख ही भेजें।
- लेखक अपना पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या लेख के साथ अवश्य लिखें।
- परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।
- अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटायी नहीं जाती हैं।
- रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।
- स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। -**संपादक**

आर्यजगत् के समाचार

यज्ञ सम्पन्न- कालाँवाली आर्यसमाज के पूर्व प्रधान श्री एस.एस. पूनिया के पौत्र के नामकरण संस्कार पर यजुर्वेद और सामवेद पारायण यज्ञ वैदिक विद्वान् स्वामी विदेह योगी द्वारा सम्पन्न हुआ। वैदिक प्रचारक श्री पूर्णचन्द नागर के उद्बोधन हुए। इस अवसर पर नगरपालिका की पूर्व अध्यक्षा श्रीमती मंजू सचदेवा, सरदार हीरासिंह अरनेजा आदि कई गणमान्य जनों ने भाग लिया।

विभिन्न कार्यक्रम- महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन न्यास, जोधपुर द्वारा १३६वें ऋषि स्मृति सम्मेलन का आयोजन दि. २९ सितम्बर से २ अक्टूबर २०१९ तक किया गया है। इस अवसर पर राष्ट्रीय वेद गोष्ठी का आयोजन भी किया जा रहा है, जिसमें 'ऋग्वेद के अग्निसूक्त के स्वामी दयानन्द सरस्वती के भाष्य से अन्य भाष्यकारों के भाष्य का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर विद्वान् व शोधार्थी अपनी प्रस्तुति देंगे। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा दिल्ली, प्रान्तों की सभी आर्यसभाओं एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति न्यास, जोधपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 'पद्म विभूषण महाशय धर्मपाल जी गुलाटी' को 'विश्व आर्यरत्न' उपाधि से सम्मानित किया जायेगा। **सम्पर्क सूत्र**- ०२९१-२५१६६५५, ९८२९०२७४८१

वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न- आर्यसमाज हिरणमगरी, उदयपुर, राज. द्वारा १८ से २५ अगस्त २०१९ तक आयोजित वेद प्रचार सप्ताह का समापन यज्ञ, भजन व प्रवचन के साथ सम्पन्न हुआ। विद्वान् आचार्य श्री चन्द्रेश आर्य ने प्रतिदिन क्रियात्मक योगाभ्यास करवाया। भजनोपदेशक श्री रामदयाल आर्य ने भजनों की संगीतमय प्रस्तुति दी। मुख्य अतिथि श्री अशोक आर्य ने प्रेरक उद्बोधन दिया। स्वागत समाज के प्रधान श्री भँवरलाल आर्य ने किया तथा आभार श्री इन्द्रप्रकाश यादव ने किया एवं मंच संचालन समाज के मन्त्री भूपेन्द्र शर्मा द्वारा किया गया।

योग सम्मेलन सम्पन्न- 'अध्यात्म पथ' मासिक पत्रिका द्वारा देश-धर्म पर बलिदान देने वाले वीरों की याद में राष्ट्र-कल्याण महायज्ञ, भजन संध्या एवं सम्मान समारोह का भव्य आयोजन आर्यसमाज पश्चिम विहार में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री भारतभूषण साहनी ने की तथा मुख्य अतिथि वेस्ट जोन के चेयरमैन श्री कैलाश सांकला थे। समारोह का आयोजन विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर के सान्निध्य में हुआ। इस अवसर पर श्री नरेन्द्र आर्य सुमन के भजनों एवं श्री विनय शुक्ल विनम्र की कविताओं ने सबका मन मोह लिया। समारोह में आर्यजगत् के मूर्धन्य संन्यासी स्वामी धर्ममुनि को अध्यात्म मार्तण्ड सम्मान से विभूषित करते हुए प्रशस्ति-पत्र, सम्मान राशि एवं शाल भेंट की गई। अध्यात्म रत्न सम्मान से श्री देशराज सेठी, श्री विनोद कुमार शर्मा, प्रिं. शालिनी अरोरा को सम्मानित किया गया। विद्यासागर नागिया स्मृति सम्मान से डॉ. हरीश मटई को सम्मानित किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय दयानन्द वेदपीठ के महामन्त्री श्री सत्यानन्द आर्य द्वारा ध्वजारोहण किया गया। अतिथि सम्पादक श्री सुरेन्द्र चौधरी एवं प्रबन्ध सम्पादक श्री अश्विनी नांगिया ने सभी अभ्यागतों का धन्यवाद किया।

वार्षिकोत्सव- आर्ष गुरुकुल, वानप्रस्थाश्रम नोएडा का वार्षिकोत्सव ११ से १५ दिसम्बर २०१९ को मनाया जायेगा जिसमें पारायण यज्ञ, वेदकथा, आर्य महिला सम्मेलन, सत्यार्थप्रकाश सम्मेलन, राष्ट्रभक्ति एवं क्रान्तिकारी गीतों का कार्यक्रम, १०१ कुण्डीय विश्वशान्ति सौहार्द महायज्ञ, गुरुकुल एवं बलिदान सम्मेलन आयोजित किये जायेंगे। मूर्धन्य विद्वानों, संन्यासियों, आर्य नेताओं के विचार एवं भजनोपदेशकों के मधुर भजन श्रवण करने को मिलेंगे। सभी से अनुरोध है कि उपरोक्त तिथियों पर आप सभी सपरिवार सादर आमन्त्रित हैं।

वैवाहिक समाचार

९. वर चाहिए- आर्य परिवार, संस्कारित, रंग- गौर वर्ण, आयु-२५, कद-५ फुट १ इंच, शिक्षा- बी.टेक, आई.टी. सेक्टर में कार्यरत प्रतिष्ठित परिवार की युवती हेतु आर्य परिवार का सुशिक्षित एवं संस्कारी युवक चाहिए। **सम्पर्क**- **७८९१८७८९१८**

चुनाव समाचार

१०. आर्यसमाज, कैलाश-ग्रेटर कैलाश-१, नई दिल्ली का चुनाव सम्पन्न हुआ, जिसमें **प्रधान**- श्री विजय लखनपाल, **मन्त्री**- श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा, **कोषाध्यक्ष**- श्री विजय भाटिया को चुना गया।

शोक समाचार

आर्य प्रतिनिधि सभा गुजरात के मन्त्री, आर्य वीर दल गुजरात के संचालक, महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के ट्रस्टी **श्री हसमुख भाई परमार** का दि. २४ अगस्त २०१९ को ७० वर्ष की आयु में अचानक निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। **परोपकारी परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धाञ्जलि।**